पी आर जी आई/आर एन आई पंजीयन संख्या: - RAJBIL/2014/59398 ● वर्ष 11 ● अंक 1 ● जुलाई 2026

PUBLISHER FIRST MAGZINEE 1st NEWS

PUBLISHER FIRST

पब्लिशर फर्स्ट

English and Hindi Monthly Magazine

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 12 साल बेमिसाल



भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान
(भजनलाल युग का उदय)



जवाहर सिंह बेढ़म
गृह राज्य मंत्री
(सुशासन और पत्रकार सुरक्षा के नए संवाहक)

विशेषांक

अंदर के पेजों पर....



डॉ. पप्पू राम डारा
अध्यक्ष
गुरु जंभेश्वर सेवा संस्थान जोधपुर



पीडी नित्या, आईपीएस



सुरेश कुमार उपाध्याय



कन्हैयालाल जोशी



कैलाश जोशी



श्रीमती इन्द्रा छाबा


भारत का नया राष्ट्रीय समाचार नेटवर्क
S भारत
29NEWS
राष्ट्र सर्वप्रथम
पर्यावरण संरक्षण
S BHARAT
NATIONAL NEWS NETWORK
NATION FIRST | ENVIRONMENT PROTECTION
सत्य निर्भीक समर्पित
करोड़ों दिलों की धड़कन, अब भारत के प्रमुख मंचों पर!
राजस्थान की पावन धरती से उठकर S BHARAT National News Network भारतीय पत्रकारिता में एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। यह केवल समाचार नहीं, बल्कि प्रशासनिक पारदर्शिता, राष्ट्र की अखंडता, पर्यावरण संरक्षण और निर्भीक पत्रकारिता की सशक्त आवाज है।
S.भारत LIVE NOW
यहाँ देखें LIVE
JioTV
पूरे भारत में LIVE
TATA PLAY
सैटेलाइट पर उपलब्ध
हमारी विशेषताएँ
सत्य एवं निर्भीक पत्रकारिता
प्रशासनिक ऑडिट एवं पारदर्शिता
पर्यावरण संरक्षण
राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता
जन-जन की आवाज, हमारा संकल्प
शीघ्र आ रहा है
DTH
नेटवर्क पर
CABLE
नेटवर्क पर
OTT
प्लेटफॉर्म पर
सोशल मीडिया पर जुड़ें
SEARCH करें: S BHARAT
YouTube
Facebook
Instagram
X (Twitter)
WhatsApp
Telegram
Koo
ShareChat
CORPORATE OFFICE
Opposite Circuit House,
Sandhu Palace Hotel,
Jodhpur (Rajasthan) - 342001
HI-TECH MEDIA HUB
Advanced News Editing Centre,
Noida (Delhi NCR)
MOBILE
+91 9982888857
LANDLINE
0291-2548857
OFFICE TIMING
09:00 AM – 05:00 PM
EMAIL
info@sbharatnews.com
WEBSITE
www.sbharat.live
S.भारत LIVE NOW
सच की आवाज
राष्ट्र की आवाज
SA 29NEWS PVT. LIMITED
CIN: U22220RJ2024PTC098765
सत्य & निर्भीक पत्रकारिता
प्रशासनिक ऑडिट एवं पारदर्शिता
पर्यावरण संरक्षण
राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता
जन-जन की आवाज हमारा संकल्प

PUBLISHER FIRST

PRGI/RNI REG- RAJBIL/2014/59398 English and Hindi Monthly Magazine

प्रधान संपादक
(Editor-in-Chief)
सत्यनारायण जोशी

मानद शिक्षा एवं नीति सलाहकार
(Honorary Education & Policy Advisor)
प्रकाश बिश्नोई खारा



आवरण फोटोग्राफ
प्रधानमंत्री के फेसबुल पेज से साभार

Design & Development Support
New Sense Marketing Services Pvt. Ltd.
Website: www.newsensepvtltd.com
WhatsApp: 9411229553

पब्लिशर फर्स्ट
आपकी आवाज, आपकी पत्रिका

© सर्वाधिकार सुरक्षित

Price @ Rs. 100/-

● वर्ष 11 ● अंक 1 ● जुलाई 2026

संपादकीय/विज्ञापन/प्रसार-संपर्क

01, भोजासर, तहसील/जिला- फलोदी, संभाग जोधपुर, (राजस्थान), पिन कोड - 342311,

ईमेल
publisherfrist@gmail.com

मोबाइल
9461108857

- स्वत्वाधिकारी सत्यनारायण द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका बिना आमंत्रित सामग्री को लौटाने के लिए बाध्य नहीं है।
- सभी विवादों का निपटारा "फलोदी, जोधपुर" की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जाएगा।

- स्वत्वाधिकारी सत्यनारायण द्वारा मेसर्स पाल प्रिंटिंग प्रेस वैशाली नगर पाल रोड जोधपुर, राजस्थान से मुद्रित एवं 01, भोजासर, तहसील/जिला- फलोदी, संभाग जोधपुर, (राजस्थान), पिन कोड - 342311, से प्रकाशित, प्रधान संपादक सत्यनारायण

PUBLISHER FIRST
JODHPUR, RAJASTHAN

PRGI/RNI REG- **RAJBIL/2014/59398**

विवरण

1.	जब फैसलों ने बदला देश...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	6
2.	मरुधरा में भजनलाल युग का उदय	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	9
3.	माटी की महक, सुशासन का...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	12
4.	सादगी, संकल्प और सेवा के...	सत्यनारायण जोशी	14
5.	खाकी का वह चेहरा...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	23
6.	दाताराम गढ़ के 'बाय' गांव...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	25
7.	मिट्टी से जुड़े कदम...	सत्यनारायण जोशी	27
8.	वास्तविक सफलता समृद्धि के...	सत्यनारायण जोशी	30
9.	गांव की बहू इंद्रा देवी...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	32
10.	बदलता समय चक्र...	पंडित जगदीश पंचारिया	34
11.	वासन्ती ऊर्जा और समृद्धि...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	36
12.	मरुधरा की जीवन रेखा...	पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर	38



image created by stock.adobe.com/in

राष्ट्र-प्रथम का संकल्प, सुशासन की कसौटी और मारवाड़ का मानस

पत्रकारिता जब केवल सूचनाओं का पुलिंदा न रहकर समाज को सही दिशा देने का माध्यम बनती है, तब इतिहास करवट लेता है। 'Publisher First' मासिक पत्रिका का यह वार्षिक विशेषांक ऐसे ही एक ऐतिहासिक कालखंड में आपके हाथों में है, जब देश और प्रदेश दोनों ही विकास, राष्ट्रवाद और सुशासन के नए प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। इस विशेष अंक के माध्यम से हमने राष्ट्र-निर्माण के वैश्विक महानायकों से लेकर मारवाड़ की माटी के धरातलीय संरक्षकों, कर्मयोगियों और समाज के गौरवमयी स्तंभों तक की यात्रा और उनके विजन को पूरी प्रामाणिकता के साथ समेटने का प्रयास किया है।

वैश्विक पटल पर भारत की साख को आसमान की बुलंदियों पर पहुंचाने वाले यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के '12 साल बेमिसाल' का कार्यकाल केवल राजनीतिक नेतृत्व का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान, सुदृढ़ विदेश नीति और अंत्योदय का स्वर्णिम युग है। मोदी जी के इसी अंत्योदय और राष्ट्र-प्रथम के संकल्प को जब हम मारवाड़ के धरातल पर देखते हैं, तो हमारी माटी में एक ऐसा निष्कलंक और विराट चेहरा नजर आता है, जिसने बिना किसी राजनीतिक पद की लालसा के केवल जनसेवा को ही अपने जीवन का परम ध्येय बना लिया है।

'मारवाड़ का महानायक' डॉ. पप्पू राम डारा का सामाजिक विजन, छत्तीस कौम के उत्थान के लिए उनका समर्पण, शिक्षा-चिकित्सा क्रांति और जीव-दया के क्षेत्र में उनका अकल्पनीय अवदान आज मारवाड़ की सियासत और सामाजिक ताने-बाने को एक नई और सकारात्मक दिशा दे रहा है।

सुशासन की इसी कड़ी में जब हम राजस्थान की कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक दृढ़ता की बात करते हैं, तो प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का होमवर्क* अब धरातल पर पूरी ताकत से दिखाई देने लगा है। राजस्थान अब पूरी तरह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी और असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा जी की तर्ज पर 'जीरो टॉलरेंस' और अपराधियों के खिलाफ कठोरतम प्रहार की राह पर चल पड़ा है। शासन के इसी इकबाल को और मजबूत करने तथा पुलिस महकमे को नई दिशा देने में गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम की सकारात्मक कार्यशैली और दूरगामी फैसलों की गूंज इस अंक की एक विशेष स्टोरी है, जो बताती है कि कैसे राजस्थान में कानून का राज स्थापित हो रहा है।

इस व्यवस्था को धरातल पर अमलीजामा पहनाने में फील्ड पुलिसिंग का रोल सबसे अहम होता है, जिसका जीवंत उदाहरण हमारे सामने जोधपुर ग्रामीण की जांबाज एसपी 'लेडी सिंघम' पी.डी. नित्या के रूप में मौजूद है, जो कश्मीर के पुलवामा जैसे अति-संवेदनशील क्षेत्र में देश के दुश्मनों के छक्के छुड़ाने के बाद अब मारवाड़ में अपराधियों के लिए काल बन चुकी हैं। विकेंद्रीकरण और ग्रामीण विकास की बात करें तो टांगला पंचायत की सरपंच और 'गाँव की बहू' इन्द्रा देवी छाबा ने धरातल पर विकास का एक नया और ऐतिहासिक कीर्तिमान रचा है। उन्होंने अपनी पंचायत को एक 'मॉडल गाँव' के रूप में तब्दील कर महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण सुशासन की एक अद्भुत मिसाल पेश की है।



सत्यनारायण जोशी
प्रधान संपादक

सामाजिक ताने-बाने और गौरव की बात हो तो गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज के तीन सफल व्यापारी व वरिष्ठ समाजसेवी सुरेश उपाध्याय (जयपुर), कन्हैयालाल जोशी (सोनामुखी किंग व अध्यक्ष गौतम सभा, फलोदी) तथा कैलाश जोशी ने अपनी व्यापारिक कुशलता के साथ-साथ समाज को जोड़ने और सामाजिक उत्थान में जो अनुकरणीय योगदान दिया है, वह पूरे मारवाड़ के लिए प्रेरणापुंज है।

सामयिक और वैचारिक सामग्री के साथ-साथ इस अंक में हमने पाठकों के जीवन से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण पक्षों को भी छुआ है। आने वाले समय के गर्भ में क्या छिपा है, इसका प्रामाणिक और वैज्ञानिक विश्लेषण करती 'ज्योतिष की सटीक भविष्यवाणियाँ' आपके जीवन की राह को आसान बनाएंगी वहीं, शहरी चकाचौंध से दूर 'ग्रामीण जिंदगी में सेहत का राज' ढूँढता हमारा विशेष लेख आपको अपनी जड़ों की ओर लौटने को मजबूर करेगा। स्वास्थ्य के इसी क्रम में 'आयुर्वेद के चमत्कारी और सरल नियम' भी इस अंक का हिस्सा हैं, जो बिना किसी कठिन कसरत या डाइटिंग के, केवल जीवनशैली बदलकर वजन घटाने का अचूक मार्ग बताते हैं। इसके साथ ही, आमजन की रोजमर्रा की समस्याओं और धरातलीय मुद्दों को उठाती 'जनसरोकार की विशेष खबरें' इस अंक की रीढ़ हैं।

'Publisher First' का यह वार्षिक विशेषांक केवल आंकड़ों और विज्ञापनों का संकलन नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रवाद, सुशासन, निष्काम जनसेवा, प्रशासनिक ईमानदारी और सामाजिक सरोकार का एक जीवंत आईना है। हमारा यह प्रयास आपको कैसा लगा, आपके सुझावों और समीक्षा का हमें सादर इंतजार रहेगा।

सत्यनारायण जोशी, प्रधान संपादक
पब्लिशर फर्स्ट, मासिक पत्रिका

संपादकीय

जब फैसलों ने बदला देश का भूगोल और इतिहास

विशेष रिपोर्ट: भारतीय राजनीति का 'मोदी युग'

26 मई 2014 को जब दिल्ली के रायसीना हिल्स पर एक नए नेतृत्व ने शपथ ली थी, तब देश बदलाव की एक मूक उम्मीद से भरा था। आज साल 2026 है। पूरे 12 साल बीत चुके हैं। राजनीति में 12 साल का वक्त सिर्फ कैलेंडर के पन्ने बदलना नहीं होता, बल्कि एक पूरी पीढ़ी की सोच और देश की दिशा को बदलना होता है। सोशल मीडिया पर भले ही अतिशयोक्ति में बहुत कुछ लिखा जा रहा हो, लेकिन जब हम ठंडे दिमाग से जमीन पर उतरकर देखते हैं, तो समझ आता है कि इन 12 सालों ने भारत के आत्मसम्मान और सामर्थ्य को किस तरह एक नई ऊंचाई दी है। यह कोई सरकारी आंकड़ों का पुलिंदा नहीं, बल्कि उन 12 सालों की कहानी है जिसने देश की धड़कनों को छुआ है।

वैश्विक मंच पर भारत का बढ़ता कद और रिकॉर्ड्स

आज से एक दशक पहले तक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की गिनती एक बड़े बाजार के रूप में तो होती थी, लेकिन एक मजबूत नीति निर्धारक के रूप में कम ही देखा जाता था। पिछले 12 सालों में यह तस्वीर पूरी तरह बदल गई है।



फोटोग्राफ प्रधानमंत्री के फेसबुक पेज से साभार

अमरीका की मशहूर रेटिंग एजेंसी 'मॉर्निंग कंसल्ट' के आंकड़ों को अगर देखें, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार कई सालों से



फोटोग्राफ प्रधानमंत्री के फेसबुक पेज से साभार



फोटोग्राफ प्रधानमंत्री के फेसबुक पेज से साभार

दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेताओं की सूची में पहले पायदान पर बने हुए हैं। दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देशों के राष्ट्राध्यक्षों को पछाड़कर इतने लंबे समय तक शीर्ष पर बने रहना, अपने आप में एक वैश्विक रिकॉर्ड है।

इसके अलावा, जब हमारे देश के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 को चांद के उस दक्षिणी ध्रुव पर उतारा जहां आज तक कोई देश नहीं पहुंच पाया था, तो वह सिर्फ एक वैज्ञानिक कामयाबी नहीं थी, बल्कि हर हिंदुस्तानी के सीने को गर्व से चौड़ा करने वाला पल था। आज दुनिया का लगभग 46 फीसदी डिजिटल लेनदेन (UPI) अकेले भारत में होता है। अमेरिका और यूरोप जैसे देश भी आज भारत के इस डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को देखकर हैरान हैं।

वो फैसले जिन्होंने देश की तकदीर और तस्वीर बदली

इन 12 सालों को 'बेमिसाल' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस दौरान सरकार ने ऐसे फैसले लेने की हिम्मत दिखाई, जिन्हें छूने से भी पुरानी सरकारें कतराती थीं।

राष्ट्रीय सुरक्षा में 'न्यू नॉर्मल' और ऑपरेशन सिंदूर

अब भारत केवल हमलों पर दुख नहीं जताता, बल्कि सीधा और सटीक प्रहार करता है। हाल ही में चलाया गया 'ऑपरेशन सिंदूर' इसका सबसे बड़ा और जीवंत सबूत है। पहलगाम में निर्दोष नागरिकों पर हुए कायराना हमले के बाद भारत ने सीमा पार जाकर आतंकियों के ठिकानों को मटियामेट कर दिया। इस सैन्य कार्रवाई ने पूरी दुनिया को संदेश दिया कि आज का भारत अपनी सुरक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।

कश्मीर से कड़वाहट का अंत

अनुच्छेद 370 का हटना सिर्फ एक कानूनी बदलाव नहीं था। यह दशकों से रिसते उस जख्म पर मरहम था जिसने कश्मीर को मुख्यधारा से अलग कर रखा था। आज वहां का आम युवा पत्थरबाजी छोड़कर विकास और मुख्यधारा की भाषा बोल रहा है।

सांस्कृतिक गौरव की वापसी

सदियों का इंतजार खत्म हुआ और अयोध्या में प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर का निर्माण हुआ। इसके साथ ही काशी विश्वनाथ और महाकाल लोक का पुनरुद्धार हुआ। इसने देश को अहसास

कराया कि आधुनिकता की दौड़ में दौड़ते हुए हमें अपनी जड़ों और संस्कृति को भूलना नहीं है।

आर्थिक महाशक्ति बनने का सफर

साल 2014 में भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था, जहां महंगाई और घोटालों की गूंज ज्यादा थी। आज 2026 में भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बन चुका है और बहुत जल्द तीसरी पायदान पर पहुंचने की तैयारी में है। 'एक देश-एक टैक्स' यानी जीएसटी ने व्यापार की राह आसान की, तो वहीं देश में बने लाखों किलोमीटर के हाईवे ने गांवों को शहरों से और उम्मीदों को हकीकत से जोड़ा।

अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति की चिंताः जनधन खातों के जरिए गरीबों का पैसा सीधे उनके बैंक खाते में पहुंचने लगा, जिससे भ्रष्टाचार की बिचौलिया संस्कृति खत्म हुई। मुफ्त राशन, पक्के मकान और उज्ज्वला योजना ने देश के करोड़ों गरीब परिवारों को एक गरिमापूर्ण जीवन जीने का हक दिया।



फोटोग्राफ प्रधानमंत्री के फेसबुक पेज से साभार

एक निष्पक्ष नजरिया

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इन 12 सालों की शानदार कामयाबियों के बीच आज भी देश के सामने कई चुनौतियां खड़ी हैं। युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करना और ग्रामीण इलाकों में आमदनी को बढ़ाना एक ऐसा मोर्चा है जहां सरकार को अभी और गहराई से काम करने की जरूरत है। लेकिन कुल मिलाकर, इतिहास जब भी इस दौर का मूल्यांकन करेगा, तो वह साफ कहेगा कि इन 12 वर्षों में भारत ने 'चलता है' वाली सुस्त मानसिकता को छोड़ दिया है। आज का भारत रिस्क लेना जानता है, कड़े फैसले लेना जानता है और दुनिया की आंखों में आंखें डालकर अपनी बात रखना जानता है। यही इस 'बेमिसाल' सफर की सबसे बड़ी हकीकत है।

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

क्या आप जानते हैं...?

मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप

दिवेर का युद्धः 1582 में हुए दिवेर के युद्ध में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप मुगल सेना को करारी शिकस्त दी। इतिहासकार कर्नल टॉड ने इस युद्ध को 'मेवाड़ का मैराथन' कहा है। (सोर्स- एआई)
पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका

मरुधरा में 'भजनलाल युग' का उदय

विशेष रिपोर्ट: - पावर सेंटर्स पर लगाम और कड़े फैसलों से बदली राजस्थान की रफ्तार

26 मई 2014 को जब देश के शीर्ष नेतृत्व ने कमान संभाली थी, तब से शुरू हुआ बदलाव का सफर आज साल 2026 में मरुधरा की धरती पर एक नए रूप में जीवंत हो उठा है। राजस्थान की राजनीति में अक्सर यह माना जाता था कि सत्ता बदलने के बाद शुरुआती साल सिर्फ व्यवस्था को समझने और बड़े नेताओं के दबाव को झेलने में निकल जाता है। लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस पुरानी लीक और धारणा को पूरी तरह तोड़ दिया है।

शुरुआती दौर की शांति को जिन्होंने उनकी कमजोरी समझने की भूल की थी, वे आज हैरान हैं। मुख्यमंत्री अब पूरी तरह से 'एक्शन मोड' में आ चुके हैं। यह बदलाव महज एक प्रशासनिक फेरबदल नहीं, बल्कि राजस्थान को 'सशक्त और आत्मनिर्भर' बनाने के लिए सत्ता की कमान को पूरी तरह अपने हाथों में लेने की एक सोची-समझी रणनीतिक इच्छाशक्ति है। इतिहास गवाह है कि मुख्यमंत्री हो या प्रधानमंत्री, उसका पहला कार्यकाल ही उसकी अमिट छाप छोड़ता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी अपनी कार्यशैली से यह साबित कर दिया है कि नेतृत्व अगर जमीन से जुड़ा और दूरदर्शी हो, तो फैसले फाइलों में दम नहीं तोड़ते, सीधे जनता के दिलों को छूते हैं।

योगी और डॉ. हिमंता बिसवा सरमा के मार्ग पर: राजस्थान का सबसे सख्त और कड़क चेहरा बनने का सफर

राजस्थान के राजनीतिक विश्लेषक अब साफ देख रहे हैं कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने देश के चर्चित और कड़क मुख्यमंत्रियों की कतार में शामिल होने का अपना 'होमवर्क' पूरा कर लिया है। उत्तर प्रदेश के योगी आदित्यनाथ और असम के हेमंत बिस्वा सरमा की तर्ज पर अब राजस्थान में भी 'शर्मा का विज़न' कड़ाई से लागू हो रहा है।

सचिवालय से लेकर जिलों तक, पार्टी और सरकार को कमजोर करने वाले किसी भी 'समानांतर पावर सेंटर' या दबाव की राजनीति को उन्होंने पूरी तरह चिन्हित कर लिया है। अब फाइलें किसी के इशारे या दबाव पर नहीं, बल्कि सीधे मुख्यमंत्री के विज़न से आगे बढ़ रही हैं। मुख्य सचिव स्तर पर बदलाव और सीएमओ (मुख्यमंत्री कार्यालय) के जरिए प्रत्येक विभाग पर सीधी पैनी नजर इसका बड़ा प्रमाण है। हर विभाग की योजनाएं अब सीधे मुख्यमंत्री के नाम और चेहरे से पहचानी जा रही हैं,



मुख्यमंत्री के फेसबुक पेज से साभार



मुख्यमंत्री के फेसबुक पेज से साभार

जिसने मंत्रियों के एकाधिकार को कम करके सरकार को एक 'सिंगल और मजबूत कमांड' में ला खड़ा किया है।

पश्चिमी सीमा पर भजनलाल का 'मास्टर स्ट्रोक': राष्ट्रवाद का उफान

इस दौर का सबसे साहसिक, ऐतिहासिक और सर्वाधिक रिस्क लेने वाला फैसला पश्चिमी राजस्थान की सीमा पर देखने को मिला है। भारत-पाकिस्तान सीमा से सटे संवेदनशील जिलों- बीकानेर, गंगानगर, जैसलमेर, फलोदी, बाड़मेर और जालौर- में अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर के 50 किलोमीटर के दायरे में अवैध निर्माणों और अतिक्रमण के खिलाफ जो बड़ी कार्रवाई शुरू हुई है, उसने पूरे तंत्र में हड़कंप मचा दिया है।

सुरक्षा और राष्ट्र प्रथम

देश की सीमा की सुरक्षा को राजस्थान सरकार ने अपना 'मास्टर प्लान' बनाया है। हालांकि मुख्यमंत्री अपनी राजनीतिक परिपक्वता दिखाते हुए इसका श्रेय केंद्रीय गृहमंत्री के विज़न को देते हैं और गृह मंत्रालय को रिपोर्ट सिर्फ सूचनार्थ भेजते हैं, लेकिन जमीन पर इस पूरी कार्रवाई की कमान और पल-पल की मॉनिटरिंग स्वयं मुख्यमंत्री कर रहे हैं।

इस ऐतिहासिक कदम के बाद भजनलाल शर्मा राजस्थान के इतिहास में सर्वाधिक रिस्क लेने वाले और एक प्रखर राष्ट्रवादी, सख्त नेता के रूप में उभरकर सामने आए हैं। सीमांत क्षेत्रों की संवेदनशीलता को समझते हुए जैसलमेर की सम पंचायत समिति की जगह खुहड़ी जैसी नई रणनीतिक पंचायत समितियों का गठन इसी दूरगामी सोच का हिस्सा है। इस 'राष्ट्र प्रथम' के मुद्दे पर विपक्ष भी पूरी तरह अवाक और निरुत्तर है।

युवाओं के सपनों को पंख: नकल माफिया का समूल नाश

राजस्थान का युवा पिछले कई सालों से पेपर लीक के दंश से भीतर तक टूट चुका था। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सत्ता संभालते ही सबसे पहला प्रहार इसी 'नकल माफिया' की रीढ़ पर किया। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (SIT) के गठन से लेकर बड़े-बड़े मगरमच्छों को सलाखों के पीछे भेजने तक, सरकार ने युवाओं के मन में यह भरोसा लौटाया कि अब उनकी मेहनत का सौदा नहीं होगा।

इसी भरोसे को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने शिक्षा, पुलिस और राजस्व जैसे महत्वपूर्ण विभागों में 26,000 से अधिक पदों पर

सीधी भर्ती की प्रक्रिया शुरू की है। इसके साथ ही, 'मुख्यमंत्री युवा रोजगार प्रोत्साहन योजना' के जरिए बेरोजगार युवाओं को आर्थिक संबल और हुनरमंद बनाने का जो काम शुरू हुआ है, उसने युवाओं के चेहरों पर मुस्कान लौटाई है।

गांवों और उद्योगों का कायाकल्प: अंत्योदय से औद्योगिक क्रांति तक

भजनलाल सरकार के दो बड़े नीतिगत फैसले सीधे राजस्थान के भूगोल और अर्थव्यवस्था को बदल रहे हैं:

'गरीबी मुक्त विलेज योजना': ₹गांव खुशहाल तो राजस्थान खुशहाल₹ के मूलमंत्र के साथ 350 करोड़ के बजट से पहले चरण में 5,000 गांवों को पूरी तरह गरीबी के जाल से बाहर निकालने का बीड़ा उठाया गया है। यह योजना किसी बंद दफ्तर से नहीं, बल्कि सीधे उन झोपड़ियों और कच्चे मकानों तक पहुंच रही है जहां विकास की किरण पहुंचना बाकी था।

'इंडस्ट्रियल पॉलिसी 2026': राजस्थान को सिर्फ पर्यटन तक सीमित न रखकर 30 लाख करोड़ की विशाल इकोनॉमी बनाने के लिए नई औद्योगिक नीति को मंजूरी दी गई है। इसमें पहली बार 'डेटा सेंटर' और 'लॉजिस्टिक्स' को उद्योग का दर्जा दिया गया है। 'राइजिंग राजस्थान समिट' के जरिए आ रहे निवेश की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि अब हर जिले की अपनी औद्योगिक नीति होगी, जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार के लिए अपना घर-गांव छोड़कर दूर नहीं भटकना पड़ेगा।

5. कर्मठ तंत्र को संबल: कर्मचारियों को दो साल की विशेष राहत
मुख्यमंत्री जानते हैं कि कोई भी नीति तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक उसे लागू करने वाला प्रशासनिक तंत्र खुश न हो। अपनी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए मुख्यमंत्री ने राज्य कर्मचारियों के लिए पदोन्नति (Promotion) की समय-सीमा में 2 वर्ष की विशेष छूट दी है। इस एक फैसले ने सचिवालय से लेकर दूर-दराज के गांवों में बैठे पटवारी, ग्राम विकास अधिकारी और शिक्षकों तक, पूरे सिस्टम में काम करने की एक नई ऊर्जा



मुख्यमंत्री के फेसबुक पेज से साभार

और उत्साह का संचार कर दिया है।

निष्कर्ष: रिस्क लेने वाला परफॉर्मिंग नेतृत्व

यदि हम भजनलाल सरकार के इन फैसलों का गहराई से और मानवीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करें, तो एक बात साफ नजर आती है—इस सरकार की रगों में 'त्वरित निर्णय', 'राष्ट्रवाद' और 'गरीब कल्याण' का संकल्प दौड़ रहा है। चाहे बालोतरा में सामरिक महत्व के खनिजों के उत्खनन को मंजूरी देना हो, सीमाओं को सुरक्षित करना हो, या युवाओं को उनका हक दिलाना हो।

चुनौतियां पानी और भौगोलिक विषमताओं के रूप में आज भी बड़ी हैं, लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साहसिक तेवरों ने विपक्ष और राजनीतिक दिग्गजों को यह साफ संदेश दे दिया है कि अब मरुधरा थमेगी नहीं। यह एक ऐसे राजस्थान का उदय है जो अपने फैसलों में स्वतंत्र है, सीमाओं पर सुरक्षित है और अपने सुनहरे भविष्य की ओर मजबूती से कदम बढ़ा चुका है।

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

क्या आप जानते हैं...?

मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप

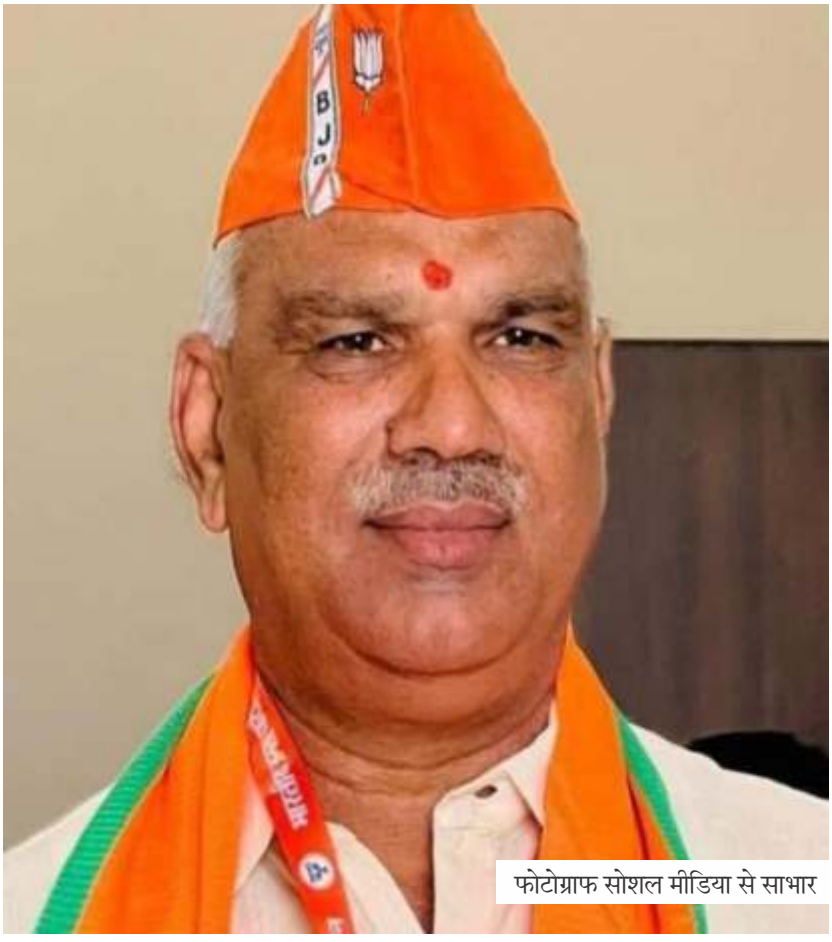
महाराणा प्रताप का विशालकाय व्यक्तित्व: उनका कद 7 फीट 5 इंच था। वे युद्ध के मैदान में लगभग 81 किलो का भाला और 208 किलो वजन (कवच और दो तलवारें) लेकर उतरते थे। (सोर्स- एआई)
पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका

माटी की महक, सुशासन का संकल्प और पत्रकार सुरक्षा के नए संवाहक: जवाहर सिंह बेढ़म

राजस्थान की माटी और यहाँ की राजनीति का नाता हमेशा से संघर्ष और सरलता का रहा है। इसी संघर्ष की कोख से कुछ ऐसे जननायक जनमते हैं, जिनकी पहचान किसी राजसी ठाठ या सियासी रसूख से नहीं, बल्कि आम जनता के बीच उनकी सहज उपलब्धता और सादगी से होती है। भरतपुर जिले के नगर विधानसभा क्षेत्र से विधायक और वर्तमान में प्रदेश के गृह राज्यमंत्री श्री जवाहर सिंह बेढ़म एक ऐसा ही नाम हैं, जिन्होंने ज़मीन की तपिश को महसूस किया है और आज उसी अनुभव के दम पर शासन व्यवस्था को एक संवेदनशील चेहरा दे रहे हैं। एक साधारण किसान परिवार में जन्मे जवाहर सिंह बेढ़म का राजनीति के शीर्ष पायदान तक पहुँचना कोई इत्तफाक नहीं है, बल्कि यह उनके तीन दशकों के अनवरत परिश्रम, सांगठनिक निष्ठा और जनता के प्रति उनके अगाध प्रेम का प्रतिफल है।

राजनीतिक यात्रा की शुरुआत

उनकी इस लंबी राजनीतिक यात्रा की शुरुआत बहुत ही जमीनी स्तर से हुई थी। उन्होंने सबसे पहले पंचायती राज व्यवस्था में रहकर ग्रामीण भारत की बुनियादी समस्याओं को बहुत करीब से देखा और समझा। वर्ष 1995 से 2000 तक पंचायत समिति सदस्य और फिर उसके बाद जिला परिषद सदस्य के रूप में उन्होंने गाँव-ढाणी के विकास के लिए दिन-रात एक किया। वे केवल पदों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि संगठन के प्रति उनकी निष्ठा इतनी अटूट थी कि पार्टी ने उन्हें विभिन्न सांगठनिक जिम्मेदारियां सौंपी। वे जिला उपाध्यक्ष रहे और लंबे समय तक प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य के रूप में संगठन को मजबूत करते रहे। पूर्ववर्ती भाजपा सरकार के दौरान जब उन्हें डांग विकास बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया, तो उन्होंने बीहड़ और पिछड़े क्षेत्रों में विकास की एक नई बयार बहाई। इसी जमीनी पकड़ का नतीजा था कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में नगर की जनता ने उन्हें अपना भरपूर आशीर्वाद देकर विधानसभा भेजा और मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने उनकी प्रशासनिक दक्षता को देखते हुए उन्हें सरकार के सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील महकमे यानी गृह मंत्रालय में राज्यमंत्री की जिम्मेदारी सौंपी।



फोटोग्राफ सोशल मीडिया से साभार

अपराधियों के मन में कानून का खौफ

गृह राज्यमंत्री का पद संभालते ही श्री जवाहर सिंह बेढ़म ने प्रशासनिक गलियारों में अपनी एक अलग और अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने साफ कर दिया है कि सुशासन केवल कागजों पर नहीं,

बल्कि धरातल पर दिखना चाहिए। अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ उनकी 'जीरो टॉलरेंस' की नीति का ही असर है कि आज प्रदेश में एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स और स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीमें पूरी मुस्तैदी से काम कर रही हैं। वे अक्सर कहते हैं कि शासन ऐसा होना चाहिए जहाँ अपराधियों के मन में कानून का खौफ हो और आम नागरिक, विशेषकर महिलाएं और समाज के कमजोर वर्ग खुद को पूरी तरह सुरक्षित महसूस कर सकें। थानों की कार्यप्रणाली को अधिक मानवीय और जवाबदेह बनाने के लिए वे खुद लगातार मॉनिटरिंग करते हैं और आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए उनकी रोज़ाना होने वाली जनसुनवाई आज पूरे प्रदेश में चर्चा का विषय बनी हुई है, जहाँ कोई भी पीड़ित सीधे उन तक पहुँच सकता है।

मीडिया और पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर ऐतिहासिक और कड़े निर्देश

इस प्रशासनिक दृढ़ता के बीच उनका एक बेहद संवेदनशील और अनुकरणीय रूप तब सामने आया, जब उन्होंने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ यानी मीडिया और पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर ऐतिहासिक और कड़े निर्देश जारी किए। श्री जवाहर सिंह बेढ़म भली-भांति समझते हैं कि एक जीवंत लोकतंत्र और पारदर्शी शासन के लिए निष्पक्ष पत्रकारिता कितनी जरूरी है। उन्होंने गृह विभाग और पुलिस प्रशासन को दो टूक शब्दों में हिदायत दी है कि फील्ड में अपनी जान जोखिम में डालकर काम करने वाले पत्रकारों की सुरक्षा और उनके सम्मान से किसी भी सूरत में खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि कोई असामाजिक तत्व या रसूखदार व्यक्ति किसी पत्रकार को सच लिखने के कारण डराता-धमकाता है या उनके साथ अभद्रता करता है, तो पुलिस बिना किसी दबाव के तुरंत और कठोरतम कानूनी कार्रवाई करे। उनका यह कदम पत्रकार बिरादरी को एक संबल देता है और यह भरोसा जगाता है कि सरकार उनके साथ खड़ी है।

गृह विभाग के इस भारी-भरकम दायित्व के साथ-साथ वे पशुपालन, डेयरी, गोपालन और मत्स्य विभाग में भी राज्यमंत्री के रूप में उतनी ही सक्रियता से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। कैबिनेट मंत्री श्री जोराराम कुमावत के नेतृत्व में वे लगातार इस प्रयास में जुटे हैं कि राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले किसानों और पशुपालकों के जीवन में खुशहाली आए। गोवंश का संरक्षण हो या दुग्ध उत्पादकों को सही मूल्य दिलाना, वे हर योजना के क्रियान्वयन को खुद जमीनी स्तर पर जाकर देखते हैं। डांग विकास बोर्ड के अपने पुराने अनुभवों का लाभ उठाते हुए वे आज भी गाँव के आखिरी छोर पर बैठे व्यक्ति की तरक्की को ही वास्तविक विकास मानते हैं।

'विकसित राजस्थान 2047' का रोडमैप

श्री जवाहर सिंह बेढ़म का विज़न केवल आज की व्यवस्था को सुधारना नहीं है, बल्कि वे एक दूरदर्शी राजनेता की तरह 'विकसित राजस्थान 2047' के रोडमैप पर काम कर रहे हैं। उनका मानना है कि आधुनिक तकनीक, सुदृढ़ कानून-व्यवस्था और औद्योगिक निवेश के जरिए राजस्थान को देश का सबसे अग्रणी राज्य बनाया जा सकता है। एक संवेदनशील हृदय, अनुशासित दिनचर्या और हर वर्ग के लिए हमेशा खुले रहने वाले उनके दरवाजे इस बात की तस्दीक करते हैं कि वे सही मायनों में एक जननायक हैं। 'PUBLISHER FIRST' मैगजीन के इस विशेषांक के माध्यम से यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि पत्रकारों को सुरक्षा की गारंटी देने और प्रदेश में कानून का इकबाल बुलंद करने वाले श्री जवाहर सिंह बेढ़म के कुशल नेतृत्व में राजस्थान का वर्तमान और भविष्य एक बेहद सुरक्षित और सुनहरे मार्ग पर अग्रसर है।

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

क्या आप जानते हैं...?

महाराणा प्रताप के सेनापति झाला मन्ना

झाला मन्ना का सर्वोच्च बलिदान: महाराणा प्रताप को संकट में देखकर उनके सेनापति झाला मन्ना (झाला बीदा) ने प्रताप का राजकीय छत्र और मुकुट खुद पहन लिया ताकि मुगल सेना भ्रमित हो जाए। झाला मन्ना ने लड़ते हुए वीरगति पाई, जिससे महाराणा को सुरक्षित निकलने का मौका मिला। (सोर्स- एआई)
पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका

सादगी, संकल्प और सेवा के अप्रतिम प्रतीक - डॉ. पप्पू राम डारा

कवर स्टोरी: मारवाड़ का महानायक

"एक ऐसा राष्ट्रवादी विजनरी जनसेवक, जिसके करोड़ों के सेवा कार्यों और छत्तीस कौम में पैठ ने बदला मारवाड़ की सियासत का मिजाज"



मारवाड़ की माटी और नेतृत्व का संकट

मारवाड़ की धरती का अपना एक अलहदा इतिहास रहा है। यह त्याग, तपस्या, शौर्य और सिद्धांतों के लिए प्राण न्यौछावर करने वाली अमर भूमि है। लेकिन पिछले कुछ समय से मारवाड़ की सामाजिक और राजनीतिक आबो-हवा में एक अजीब सा ठहराव, असंतोष और शून्य देखा जा रहा था। पारंपरिक राजनीति के घिसे-पिटे ढर्रे, नेताओं की आपसी धड़ेबंदी, जातिगत वैमनस्य और सत्ता-व्यवस्था से आम आदमी की बढ़ती दूरी ने यहाँ एक बड़े वैचारिक और नेतृत्व संकट को जन्म दिया।

जमीनी हकीकत और समाज की गहरी टीस को देखें तो एक बात साफ नजर आती है- आज तक जितने भी चेहरों को सिस्टम में जो भी पद या लालबत्तियां दी गईं, उनसे समाज का आम तबका कभी संतुष्ट नहीं हो पाया। पुरानी राजनीति की अंदरूनी गुटबाजी और केवल चुनाव के समय जागने वाले नेताओं के ढोंग से आम आदमी और युवा पीढ़ी बुरी तरह परेशान और हताश हो चुकी थी। मारवाड़ को एक ऐसे नेतृत्व की तलाश थी जो केवल भाषण न दे, बल्कि अपनी तिजोरी और अपना जीवन समाज के कल्याण के लिए होम कर दे।

ऐसे निराशाजनक माहौल के बीच, मारवाड़ की माटी से एक ऐसा व्यक्तित्व पूरी ताकत, बेदाग छवि और अकल्पनीय सेवा कार्यों के साथ उभरा, जिसने मारवाड़ में राजनीति की परिभाषा ही बदल दी। भोपालगढ़ की धरती पर जन्म लेकर फलोदी को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले डॉ. पप्पू राम डारा आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया कि बिना किसी सरकारी लालबत्ती, बिना किसी विधायक-सांसद के पद के भी यदि संकल्प मजबूत हो, तो करोड़ों-अरबों रुपये की सेवा से जनता के दिलों पर राज किया जा सकता है। आज वे मारवाड़ की छत्तीस कौम के लिए एक उम्मीद की इकलौती किरण और सर्वमान्य चेहरा बनकर उभरे हैं।

जड़ों से जुड़ाव - भींयासर से अरटिया खुर्द तक का सफर

डॉ. पप्पू राम डारा के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी ताकत उनकी सादगी है, जो उन्हें उनकी जड़ों और मारवाड़ की मिट्टी से मिलती है। उनके पूर्वजों का मूल निवास फलोदी जिले का गाँव भींयासर रहा है। समय के साथ उनका परिवार अरटिया खुर्द (पंचायत समिति भोपालगढ़, जिला जोधपुर) में आकर स्थापित हुआ।

एक साधारण किसान परिवार की पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ. साहब ने ज़मीन से जुड़कर संघर्ष किया और व्यावसायिक साम्राज्य खड़ा किया। उन्होंने अपनी प्रारंभिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में पूरी की और जोधपुर से कला संकाय में स्नातक (बी.ए.) की उपाधि प्राप्त की। व्यावसायिक ऊंचाइयों को छूने, फलोदी में 250 बीघा कृषि भूमि, आधुनिक फार्म हाउस और एक बड़े राष्ट्रीय स्तर के कारोबारी साम्राज्य के



"समराथल फाउंडेशन को ऐतिहासिक सहयोग"

मालिक होने के बाद भी उनका पहनावा (पायजामा-कुर्ता), उनकी सरल मारवाड़ी बोली और उनका व्यवहार आज भी एक ठेठ मारवाड़ी किसान जैसा ही सरल है।

समाज में उनके द्वारा किए गए ऐतिहासिक, अभूतपूर्व और अकल्पनीय सामाजिक कार्यों को रेखांकित करते हुए वर्ष 2022 में अंतर्राष्ट्रीय इंटर्नशिप विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें 'मानद डॉक्टोरेट' (सोशल वर्क) की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह इस बात का जीवंत प्रमाण है कि उनकी सेवा सिर्फ मारवाड़ या राजस्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका लोहा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी माना गया है।

शिक्षा क्रांति और चिकित्सा जगत में ऐतिहासिक अवदान

डॉ. पप्पू राम डारा का एक स्पष्ट विजन है- "किसी भी समाज या राष्ट्र का उत्थान केवल और केवल शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य के माध्यम से ही हो सकता है।" जब ग्रामीण अंचलों के होनहार युवा संसाधनों के अभाव में आईएएस, आरएएस, नीट या जेईई जैसी परीक्षाओं की तैयारी से वंचित रह जाते थे, तब डॉ. साहब ने अपनी तिजोरी के द्वार युवाओं के भविष्य के लिए खोल दिए।

"समराथल फाउंडेशन को ऐतिहासिक सहयोग"

युवा वर्ग और विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उन्होंने जोधपुर के पाल रोड स्थित समराथल फाउंडेशन सोसाइटी को 1.75 करोड़ रुपये का विशाल आर्थिक सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त, पूर्व में भी गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु 1.25 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की। इतना ही नहीं, वर्ष 2010 में उन्होंने इस पुनीत कार्य के लिए 32 लाख रुपये नकद और 20 बीघा कीमती जमीन भी संस्था को दान कर दी थी। यह उनकी दूरदर्शिता को दर्शाता है कि वे आने वाली पीढ़ियों को प्रशासनिक पदों पर देखना चाहते हैं।

शिक्षण संस्थानों का सुदृढ़ीकरण एवं ग्रामीण लैबोरेटरी

डिजिटल और बुनियादी ढांचा: राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अरटिया खुर्द में पढ़ने वाले बच्चों के लिए उन्होंने शानदार टेबल-कुर्सी सेट उपलब्ध करवाए और स्कूल में एक सर्वसुविधाजनक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) कक्ष का निर्माण अपने निजी खर्चे से करवाया।

भींयासर में आधुनिक लैब: अपनी पैतृक भूमि भींयासर में विद्यार्थियों के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के लिए उन्होंने


मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ श्री डारा।



एमपी सरकार में इन्वेस्टमेंट निवेश, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के साथ डॉ. पप्पू राम डारा।

स्कूल की लैब (प्रयोगशाला) में लगभग 9 लाख रुपये का सहयोग देकर ग्रामीण बच्चों को आधुनिक सुविधाएं प्रदान कीं।

बेटियों को बढ़ावा: 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के नारे को धरातल पर उतारते हुए उन्होंने बेटी संस्थान में शिक्षा के प्रसार हेतु 11/25 लाख रुपये की सहायता राशि अर्पित की।

चारदीवारी और भूमि दान: फलोदी क्षेत्र के 25 अलग-अलग राजकीय और सामाजिक शिक्षण संस्थानों में सुरक्षा हेतु चारदीवारी निर्माण के लिए 25 लाख रुपये का सहयोग दिया। वहीं, भोपालगढ़ क्षेत्र में शिक्षा संस्थान और धर्मशाला के लिए 32 लाख रुपये की लागत की 20 बीघा भूमि समाजहित में दान कर दी।

दूरदराज के क्षेत्रों में मदद: ओसियां क्षेत्र के सूरताराम माचरा गाँव की स्कूल में गरीब बच्चों को धूप और बारिश से बचाने के लिए 11 लाख रुपये की लागत से टीन शेड का निर्माण करवाया। जाम्बों की ढाणी स्कूल में कमरों, फर्नीचर और टीन शेड के लिए 8.50 लाख रुपये के कार्य करवाए।

स्वास्थ्य और सामाजिक सरोकार - एम्स के सामने सेवा साम्राज्य और अरटिया का ₹6 करोड़ का हॉस्पिटल

चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ. पप्पू राम डारा द्वारा किया गया कार्य पश्चिमी राजस्थान के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। उन्होंने बीमार मानवता की सेवा के लिए जो किया, वैसा उदाहरण किसी बड़े कॉर्पोरेट घराने में भी देखने को नहीं मिलता।

अरटिया गाँव में ₹6 करोड़ की लागत से भव्य हॉस्पिटल

ग्रामीण क्षेत्रों में इलाज के अभाव में दम तोड़ते लोगों के दर्द ने डॉ. डारा को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने अपनी कर्मभूमि और



पैतृक स्नेह को निभाते हुए अरटिया गाँव में लगभग 5 से 6 करोड़ रुपये की भारी-भरकम लागत से एक अत्याधुनिक हॉस्पिटल (चिकित्सालय) भवन का निर्माण करवाया है। इस चिकित्सालय के शुरू होने से अब भोपालगढ़ और आस-पास के दर्जनों गांवों के गरीब ग्रामीणों को छोटी-बड़ी बीमारियों और प्रसव आदि के लिए जोधपुर शहर की तरफ भागने और तड़पने की



जयपुर धर्मशाला के लिए 1.25 करोड़ प्रदान कर सहयोग किया।

जरूरत नहीं रही। ग्रामीण स्वास्थ्य के क्षेत्र में यह पूरे राजस्थान का एक अनूठा निजी प्रयास है।

गुरु जम्भेश्वर सेवा संस्थान: एम्स के सामने आशियाना

जोधपुर एम्स (AIIMS) में समूचे मारवाड़ और ग्रामीण इलाकों से हजारों गरीब मरीज गंभीर बीमारियों का इलाज कराने आते हैं। डॉक्टरों से पर्ची तो मिल जाती है, लेकिन सबसे बड़ी समस्या होती है मरीजों के साथ आने वाले परिजनों के ठहरने और भोजन की। इस मर्म को समझते हुए डॉ. पप्पू राम डारा ने जोधपुर एम्स हॉस्पिटल के ठीक पास बिश्नोई समाज की धर्मशाला "गुरु जम्भेश्वर सेवा संस्थान" के लिए न केवल बेशकीमती जमीन खरीदी, बल्कि 55 सर्वसुविधायुक्त कमरों के इस विशाल भवन का निर्माण कार्य शुरू करवाया। इस पूरे प्रोजेक्ट में उन्होंने लगभग 2.50 करोड़ रुपये (सवा दो करोड़ से अधिक) की ऐतिहासिक आर्थिक आहुति दी। आज यह नवनिर्मित भव्य धर्मशाला पूरी तरह संचालित है और बिना किसी भेदभाव के हर जरूरतमंद मरीज के परिजन के लिए एक आशियाना बनी हुई है।

वैश्विक महामारी में 'देवदूत' - ₹7 करोड़ का योगदान और दो ऑक्सीजन प्लांट

वर्ष 2020 और 2021 में जब पूरी दुनिया और देश कोरोना महामारी की विभीषिका से कांप रहा था, लोग अपने घरों में बंद थे और सांसों के लिए हाहाकार मचा हुआ था, तब डॉ. पप्पू राम डारा मारवाड़ की जनता के लिए 'देवदूत' बनकर धरातल पर उतरे।

7 करोड़ का ऐतिहासिक सेवा यज्ञ

कोविड काल के दौरान डॉ. डारा ने मानव जीवन को बचाने के लिए लगभग 6 से 7 करोड़ रुपये की विशाल धनराशि राहत कार्यों में झोंक दी। जब सरकारों के पास संसाधनों की कमी होने लगी थी, तब डारा साहब ने अपनी तिजोरी के मुंह खोल दिए।

फलोदी और लूणी में दो ऑक्सीजन प्लांट

कोरोना की दूसरी लहर में जब ऑक्सीजन की कमी से तड़प-तड़प कर लोगों की जानें जा रही थीं, तब डॉ. पप्पू राम डारा ने बिना एक पल गंवाए फलोदी और लूणी में दो विशाल ऑक्सीजन जनरेशन प्लांट अपने निजी खर्चे पर स्थापित करवाए। इन दोनों प्लांटों ने संकट के समय हजारों मरीजों को नया जीवनदान दिया। इसके अलावा, उन्होंने जिला कलेक्टर आपदा प्रबंधन एवं सहायता कोष, जोधपुर में 3.80 लाख रुपये की नकद राशि जमा करवाई तथा कलेक्ट्रेट विकास समिति बारां और दूदू विधानसभा क्षेत्र में राहत सामग्री के लिए त्वरित सहयोग भेजा।

दो महीनों तक अनवरत भोजन वितरण

लॉकडाउन के कारण जब गरीब, मजदूर और प्रवासियों के सामने भूखे मरने की नौबत आ गई थी, तब डॉ. साहब के विजन से एक बहुत बड़ा सेवा नेटवर्क शुरू हुआ। उन्होंने लगातार दो महीनों तक रोजाना हजारों भोजन के पैकेट तैयार करवाकर पूरे क्षेत्र में



भाजपा में प्रवेश अवसर का महत्वपूर्ण और यादगार लम्हा।

भूखे और असहाय लोगों के बीच वितरित करवाए। इस भोजन यज्ञ में जाति, धर्म या वर्ग का कोई भेद नहीं था; मकसद सिर्फ इतना था कि मारवाड़ की धरती पर कोई भी इंसान भूखा न सोए।

आस्था, सनातन और राष्ट्रवाद - मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और सुरेश सोनी जी की उपस्थिति में ₹1 करोड़ की महाघोषणा

डॉ. पप्पू राम डारा केवल एक उद्यमी या समाजसेवक नहीं हैं; वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के राष्ट्रवादी और सनातन विचारों को अपनी दैनिक जीवनशैली में जीने वाले एक सच्चे स्वयंसेवक हैं। संघ के प्रत्येक सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में उनकी भूमिका केंद्रीय होती है।

वैदिक विद्यापीठम् गुरुकुल (हरदा) हेतु ₹1 करोड़ का समर्पण

हाल ही में मध्य प्रदेश के हरदा जिला अंतर्गत पावन माँ नर्मदा तट के नांभी कुंड के पास "वैदिक विद्यापीठम् गुरुकुल (चिचोटकुटी हरदां), योग एवं पंच कर्म चिकित्सा केंद्र तथा गौशाला" के एक अत्यंत महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय प्रोजेक्ट में डॉ. पप्पू राम डारा ने 1 करोड़ (एक करोड़ रुपये) की भारी-भरकम सहयोग राशि देने की ऐतिहासिक घोषणा की। इस महान राष्ट्र-नूतन प्रोजेक्ट का उद्देश्य देश में 108 आधुनिक गुरुकुलों का संचालन करना और सनातन संस्कृति को पुनर्जीवित करना है।

इस ऐतिहासिक घोषणा के साक्षी मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक व पूर्व सह-सरकार्यवाह आदरणीय सुरेश सोनी जी बने। मुख्यमंत्री जी और संघ के शीर्ष नेतृत्व ने डॉ. डारा की इस राष्ट्रभक्ति और दानवीरता की मुक्त कंठ से सराहना की, जिसने दिल्ली और भोपाल के गलियारों में मारवाड़ के इस भामाशाह का मान बढ़ा दिया।

सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्रों का जीर्णोद्धार

जयपुर सोडाला धर्मशाला में 1 करोड़: प्रदेश की राजधानी जयपुर के सोडाला में समाज के भाइयों, विद्यार्थियों और मरीजों के ठहरने के लिए निर्माणाधीन भव्य धर्मशाला हेतु डॉ. डारा ने 1 करोड़ (एक करोड़ रुपये) का ऐतिहासिक योगदान दिया।

अरटिया गाँव में सवा करोड़ का भव्य मंदिर: वर्ष 2008 में उन्होंने अपनी जन्मभूमि अरटिया गाँव में धार्मिक चेतना जागृत करने के लिए *सवा करोड़ रुपये (1.25 करोड़) की लागत से एक भव्य और जंभेश्वर भगवान मंदिर का निर्माण करवाया।

नान्दड़ी धाम व लालासर साथरी: जोधपुर के नान्दड़ी में गुरु जम्भेश्वर मन्दिर एवं भव्य धर्मशाला के निर्माण हेतु उन्होंने 51 लाख रुपये की विशाल सहायता प्रदान की। वहीं बिश्नोई समाज के परम पवित्र धार्मिक स्थल लालासर साथरी के विकास हेतु 25 लाख की राशि समर्पित की।

श्री राम मन्दिर निर्माण, अयोध्या: अयोध्या में प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर निर्माण के राष्ट्रीय संकल्प में डॉ. डारा ने 37 लाख रुपये की राशि राम मंदिर निर्माण हेतु समर्पित की, जिसे पूरी तरह गुप्त दान की मर्यादा में रखा गया।

नर्मदा उत्तर तट (नेमावर) बिश्नोई धर्मशाला: नर्मदा



सुप्रीम कोर्ट जज न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई के हाथों से सम्मानित होते हुए


भोपालगढ़ क्षेत्र में सरकारी अस्पताल की नीव का मुहुर्त

परिक्रमा करने वाले साधु-संतों और श्रद्धालुओं के निःशुल्क आवास व भोजन व्यवस्था के लिए नेमावर में निर्मित धर्मशाला हेतु 21 लाख (पूर्व में 15 लाख) और उत्तर प्रदेश के लोदीपुर धाम मन्दिर के लिए 5 लाख रुपये का सहयोग किया। उत्तराखंड के बद्रीनाथ धाम में स्थित श्री जम्भेश्वर कुटिया के लिए 5.25 लाख रुपये और बीकानेर के खाजुवाला मंदिर हेतु 15 लाख रुपये की राशि भेंट की।

महाकुंभ 2025: प्रयागराज महाकुंभ वर्ष 2025 में श्रद्धालुओं के भोजन-भंडारा संचालन के अंतर्गत 11 लाख रुपये की राशि अर्पित की।

पर्यावरण संरक्षण और जीव-दया - अरटिया की ₹2 करोड़ की आधुनिक गौशाला

बिश्नोई समाज के प्रवर्तक भगवान गुरु जम्भेश्वर जी के बताए 'सिर साठे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' और जीव-दया के सिद्धांतों को डॉ. डारा ने अपने जीवन का मूल मंत्र बना लिया है।

अरटिया गाँव में ₹2 करोड़ की गौशाला (500 गौवंश का पालन)

गौमाता के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले डॉ. पप्पू राम डारा ने अपने पैतृक गाँव अरटिया खुर्द में 2 करोड़ (दो करोड़ रुपये) की भारी लागत से एक विशाल और आधुनिक गौशाला का निर्माण करवाया है। वर्तमान में इस गौशाला में 500 से अधिक बेसहारा और बीमार गायों का अत्यंत सम्मानजनक और वैज्ञानिक तरीके से पालन-पोषण हो रहा है। सबसे बड़ी और अनुकरणीय बात यह है कि इस गौशाला में गायों के चारे, पानी, लापसी, खल और


जीव दया का यह भाव भी महत्वपूर्ण है।

डॉक्टरों की दवाई का जो भी लाखों रुपये का मासिक खर्चा आता है, उसकी शत-प्रतिशत पूर्ति स्वयं डॉ. डारा साहब ही करते हैं। वे इसके लिए समाज या सरकार के सामने हाथ नहीं फैलाते।

इसके साथ ही जोधपुर स्थित पक्षी-धाम में मूक पक्षियों के दाने के लिए वे प्रति माह 25 क्विंटल चुग्गा अपनी तरफ से भिजवाते हैं और मारवाड़ की अन्य गौशालाओं के लिए भी प्रति माह लगभग 5 से 7 लाख रुपये का निजी व्यय नियमित रूप से वहन करते हैं।

पर्यावरण के प्रति समर्पण

लूणी क्षेत्र के ऐतिहासिक खेजड़ली पर्यावरण संस्थान में भोजनशाला के निर्माण व अन्य विभिन्न पर्यावरण चेतना



सच्ची सेवा के सम्मान का अवसर।

कार्यक्रमों हेतु उन्होंने 22 लाख रुपये से अधिक की आर्थिक सहायता प्रदान की। देश के प्रधानमंत्री के आह्वान ₹एक पेड़ माँ के नाम₹ अभियान को गति देते हुए उन्होंने जोधपुर में एन.जी.ओ. के माध्यम से 1520 बड़े पौधे रोपित करवाए और उनके संरक्षण का जिम्मा लिया। इसके अलावा पर्यावरण और जीव प्रेमी शहीद राधेश्याम पैमानी (गोडावण मैन), धोलिया की हौसलाअफजाई के लिए 1.25 लाख रुपये की सहायता राशि सीधे सुपर्द की।

छत्तीस कौम में पैठ - 108 जोड़ों के सामूहिक विवाह में 10,000 लोगों को शाही भोज

डॉ. पप्पू राम डारा की सबसे खूबसूरत बात यह है कि वे किसी एक जाति विशेष के दायरे में नहीं बंधे हैं। वे मारवाड़ की छत्तीस कौम के दुख-दर्द के सच्चे साथी हैं।

सामूहिक विवाह समारोह में ऐतिहासिक योगदान

हाल ही में मारवाड़ में आयोजित हुए छत्तीस कौम के 108 जोड़ों के भव्य आदर्श सामूहिक विवाह समारोह में जब संसाधनों और भोजन व्यवस्था को लेकर आयोजकों के सामने चिंता खड़ी हुई, तो डॉ. पप्पू राम डारा आगे आए। उन्होंने इस पावन और पुण्य कार्य में अपनी तरफ से 10,000 (दस हजार) से अधिक अतिथियों और बारातियों के लिए शुद्ध, सात्विक और शाही भोजन (खाना) की पूरी व्यवस्था अपने निजी खर्चे पर करवाई। उनके इस कदम ने 108 गरीब परिवारों को कर्ज के दलदल में डूबने से बचा लिया और छत्तीस कौम के बीच डारा साहब का कद आसमान से भी ऊंचा हो गया।

अन्य सामाजिक सरोकार

मेघवाल समाज का संबल: * भोपालगढ़ क्षेत्र में मेघवाल समाज के गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए उन्होंने 250 आधुनिक बिस्तर-गद्दे उपलब्ध करवाए ताकि उन्हें छात्रावासों में असुविधा न हो।

तेली समाज को सहयोगः फलोदी में तेली समाज के सामुदायिक भवन निर्माण हेतु 10 लाख रुपये की बड़ी आर्थिक सहायता प्रदान की।

निराश्रित बेटी का कन्यादानः जोधपुर मंडोर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित राजकीय नारी निकेतन की एक आवासीय निराश्रित बेटी की शादी का संपूर्ण खर्चा (11 लाख रुपये) स्वयं वहन कर एक पिता का फर्ज निभाया और समाज को एक नई दिशा दी।

संकटकाल के सच्चे भामाशाह और खेल प्रोत्साहन

जब-जब देश और प्रदेश पर कोई प्राकृतिक आपदा या संकट आया, डॉ. पप्पू राम डारा ने हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहकर एक जिम्मेदार और सजग नागरिक की भूमिका निभाई है।

खेल और युवा ऊर्जा का संचारः ग्रामीण अंचल की खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने और उन्हें नशे की लत से दूर रखकर मैदान से जोड़ने के लिए उन्होंने जोधपुर से हर जिले की बिश्नोई क्रिकेट टीम के लिए 5 लाख रुपये का विशेष फंड दिया। बास्केटबॉल खेल प्रशिक्षण शिविर में खिलाड़ियों को खेल किट और जर्सी का वितरण कर युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया, जिससे वे राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ का नाम रोशन कर

सकें।

राजनीतिक और सामाजिक विश्लेषण - मारवाड़ की राजनीति का नया 'एक्स-फैक्टर'

हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा और विधानसभा चुनावों के दौरान जोधपुर और पाली संसदीय क्षेत्रों में कुछ स्थानीय और सामाजिक मुद्दों को लेकर बिश्नोई समाज के भीतर एक गहरी नाराजगी, असंतोष और असमंजस की स्थिति देखी जा रही थी। इस अत्यंत नाजुक मोड़ पर डॉ. पप्पू राम डारा ने अपने पुराने व्यक्तिगत संबंधों और व्यक्तिगत राजनीति को पूरी तरह दरकिनार करते हुए केवल राष्ट्रहित और संगठन की भावना को सर्वोपरि माना और भारतीय जनता पार्टी के लिए सबसे बड़े संकटमोचक (Troubleshooter) की भूमिका निभाई। उन्होंने फलोदी, भोपालगढ़, ओसियां, लूणी सहित पूरे मारवाड़ के ग्रामीण अंचलों में दिन-रात एक करके गांव-गांव, ढाणी-ढाणी का सघन दौरा किया और समाज के बुजुर्गों, पूज्य संतों व युवाओं से सीधा जीवंत संवाद स्थापित किया। उनकी इसी कुशल नेतृत्व क्षमता, बेदाग छवि और समाज में गहरी पैठ का परिणाम था कि चंद दिनों में समाज की नाराजगी दूर हुई और बिश्नोई समाज ने एकजुट होकर एकतरफा भाजपा के पक्ष में मतदान किया।

रणनीतिक रूप से देखें तो आज तक मारवाड़ की पारंपरिक राजनीति ने समाज को सिर्फ गुटों और धड़ों में बांटने का काम किया है, जिससे आम जनता का विकास बाधित हुआ। लेकिन डॉ. पप्पू राम डारा किसी भी राजनीतिक धड़े, गुटबाजी या अंदरूनी खींचतान से पूरी तरह दूर हैं। यही वजह है कि समाज के पूज्य साधु-संतों, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ विचारकों और युवाओं के बीच उनकी बात को पत्थर की लकीर माना जाता है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव जी और वरिष्ठ संघ प्रचारक सुरेश सोनी जी की मौजूदगी में उनका सम्मान इस बात का प्रतीक है कि संघ और भाजपा आलाकमान की नजरों में डॉ. डारा की विश्वसनीयता कितनी गहरी है।

यदि आने वाले समय में संगठन और सरकार मारवाड़ में एक मजबूत, दीर्घकालिक, आर्थिक रूप से सुदृढ़ और छत्तीस कौम में सर्वमान्य विजनरी नेतृत्व को आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो डॉ. पप्पू राम डारा का नाम सबसे अचूक और अजेय विकल्प है। उनके इस विराट सामाजिक कद, सादगी और करोड़ों-अरबों रुपये के जनसेवा कार्यों की बदौलत आज पूरा मारवाड़ उन्हें अपनी बुलंद आवाज़ मान रहा है। यदि ऐसे निष्कलंक, महा-दानवीर और सांगठनिक रूप से समर्पित चेहरे को नीति-निर्धारक मुख्यधारा में उचित स्थान मिलता है, तो पूरे मारवाड़ और बिश्नोई समाज में एक ऐसा सकारात्मक वातावरण तैयार होगा जो आगामी पंचायती राज चुनावों से लेकर भविष्य के हर राजनीतिक समर में संगठन के पक्ष में पासा पलटने की पूरी ताकत रखता है।



डॉ. पप्पू राम डारा

एक नज़र में: डॉ. पप्पू राम डारा का सेवा सफ़रनामा

- सेवा का क्षेत्र / संस्था का नामआर्थिक सहयोग / योगदान की राशिविजन / विशेष टिप्पणी
- कोविड-19 महामारी राहत कार्य एवं चिकित्सा सहायता 6,00,00,000/- से 7,00,00,000/-फलोदी और लूणी में दो ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना तथा 2 महीने तक भोजन पैकेट वितरण।
- राजकीय चिकित्सालय (हॉस्पिटल) भवन, अरटिया खुर्द 5,00,00,000/- से 6,00,00,000/-ग्रामीण अंचल के लिए सर्वसुविधाजनक निजी तौर पर निर्मित भव्य अस्पताल भवन।
- गुरु जम्भेश्वर सेवा संस्थान (एम्स हॉस्पिटल के पास धर्मशाला) 2,50,00,000/-55 कमरों का भव्य भवन व मरीजों के परिजनों के ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था।
- आधुनिक गौशाला निर्माण एवं संचालन, अरटिया खुर्द 2,00,00,000/- (लागत)500 से अधिक गौवंश का

पालन, संपूर्ण मासिक खर्चे का वहन स्वयं डॉ. डारा द्वारा।

- समराथल फाउंडेशन, जोधपुर (उच्च शिक्षा हेतु) 1,75,00,000/-इसके अतिरिक्त 1.25 करोड़ पूर्व में तथा वर्ष 2010 में 32 लाख नकद व 20 बीघा भूमि।
- भव्य मंदिर निर्माण (वर्ष 2008), अरटिया गाँव 1,25,00,000/-ग्रामीण क्षेत्र में आध्यात्मिक चेतना जागृत करने हेतु भव्य मंदिर का निर्माण।
- वैदिक विद्यापीठम् गुरुकुल, चिचोटकुटी (हरदा, म.प्र.) 1,00,00,000/-मुख्यमंत्री मोहन यादव व संघ नेता सुरेश सोनी जी की गरिमामयी उपस्थिति में 108 गुरुकुल मिशन हेतु।
- जयपुर सोडाला धर्मशाला (राजधानी में समाज हेतु) 1,00,00,000/-जयपुर आने वाले विद्यार्थियों, मरीजों और समाज बंधुओं के आवास हेतु ऐतिहासिक सहयोग।
- गुरु जम्भेश्वर मन्दिर एवं धर्मशाला, नान्दड़ी (जोधपुर) 51,00,000/-जोधपुर शहर के निकट समाज के बड़े केंद्र को सुदृढ़ करने हेतु सहयोग राशि।
- श्री राम मन्दिर निर्माण, अयोध्या (राष्ट्रीय समर्पण) 37,00,000/-जोधपुर, जयपुर और अरटिया गाँव से प्रभु श्री राम के चरणों में अर्पित गुप्त दान।
- शिक्षा संस्थान व धर्मशाला हेतु भूमि (भोपालगढ़ क्षेत्र) 32,00,000/- मूल्य की 20 बीघा भूमिग्रामीण शिक्षा और सामाजिक उत्थान के लिए भूमि का पूर्ण समर्पण।
- 108 आदर्श सामूहिक विवाह समारोह (शाही भोज)10,000 लोगों के भोजन का संपूर्ण खर्चछत्तीस कौम के सामूहिक विवाह में सभी बारातियों व अतिथियों हेतु भोजन व्यवस्था।
- राजकीय विद्यालय चारदीवारी निर्माण (फलोदी क्षेत्र के 25 स्कूल) 25,00,000/-ग्रामीण विद्यालयों को सुरक्षित और सुंदर बनाने हेतु चारदीवारी निर्माण सहयोग।
- लालासर साथरी विकास कोष (परम पवित्र धार्मिक स्थल) 25,00,000/-बिश्नोई समाज के मुख्य आस्था केंद्र के जीर्णोद्धार और यात्री सुविधाओं हेतु।
- खेजड़ली पर्यावरण संस्थान व लूणी क्षेत्र (पर्यावरण कार्य) 22,00,000/- से अधिकपर्यावरण चेतना और खेजड़ली स्मारक पर भव्य भोजनशाला का निर्माण।
- नर्मदा उत्तर तट (नेमावर) बिश्नोई धर्मशाला आवास/भोजन 21,00,000/-नर्मदा परिक्रमा करने वाले संतों और यात्रियों के निःशुल्क ठहरने की व्यवस्था हेतु।
- गुरु जम्भेश्वर भगवान मंदिर, खाजुवाला (बीकानेर) 15,00,000/-सीमावर्ती क्षेत्र में मंदिर निर्माण और जन-सुविधाओं के विस्तार हेतु सहयोग।
- नारी निकेतन मंडोर की निराश्रित बेटी का कन्यादान 11,00,000/-बेटी की शादी का संपूर्ण खर्च स्वयं वहन कर पिता का दायित्व निभाया।
- तेली समाज सामुदायिक भवन, फलोदी 10,00,000/-फलोदी क्षेत्र में छत्तीस कौम के सामाजिक सरोकार के अंतर्गत सामुदायिक भवन निर्माण।
- भींयासर उच्च माध्यमिक विद्यालय साइंस लैब (प्रयोगशाला) 9,00,000/-पैतृक गाँव के बच्चों को आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों और शिक्षा से जोड़ने हेतु।

संपादकीय टिप्पणी (Publisher First)

बिना किसी शोर-शराबे, हो-हल्ले और बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के, अरबों-करोड़ों रुपये की इस ऐतिहासिक सेवा को धरातल पर उतारने वाले डॉ. पप्पू राम डारा का जीवन इस बात का जीवंत उदाहरण है कि ₹सेवा कभी पदों की मोहताज नहीं होती, लेकिन पद जब ऐसे महान सेवाभावी के पास खुद चलकर आते हैं तो पूरी शासन-व्यवस्था का मान बढ़ जाता है।₹ मारवाड़ की छत्तीस कौम, युवा पीढ़ी, साधु-संतों और संघ के राष्ट्रवादी विचारों के प्रति उनकी यह अटूट निष्ठा आने वाले समय में राजस्थान की सियासत में एक नए, निष्कलंक और स्वर्णिम अध्याय की शुरुआत करने जा रही है।

सत्यनारायण जोशी, मुख्य विश्लेषक एवं प्रधान संपादक
(संपर्क सूत्र: 9982888857)
('Publisher First' विशेषांक - सर्वाधिकार सुरक्षित)

खाकी का वह चेहरा, जिसने लद्दाख की बर्फीली वादियों से लेकर मारवाड़ के रेतीले धोरों तक कानून का इकबाल बुलंद किया

पी.डी. नित्या, आईपीएस- अपनी प्रशासनिक क्षमता का लोहा मनवाया

जब देश के सबसे चुनौतीपूर्ण भूगोल में सुरक्षा और व्यवस्था की बात आती है, तो अक्सर जेहन में एक सख्त, कड़क और भारी-भरकम छवि उभरती है। लेकिन भारतीय पुलिस सेवा की अधिकारी पी.डी. नित्या को देखकर यह धारणा पूरी तरह बदल जाती है। शांत चेहरा, आंखों में गजब का आत्मविश्वास और बातों में एक ठहराव- यही पहचान है उस महिला अधिकारी की, जिसने बहुत कम समय में देश के सबसे संवेदनशील इलाकों में अपनी प्रशासनिक क्षमता का लोहा मनवाया है। आज जब वे जोधपुर ग्रामीण के पुलिस कप्तान के रूप में मारवाड़ की कानून व्यवस्था को संभाल रही हैं, तो उनके काम करने के अंदाज में वही पुराना संजीदापन और ईमानदारी साफ नजर आती है, जिसने कभी जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में इतिहास रचा था।

आरामदायक नौकरी को अलविदा कहा

छत्तीसगढ़ की सादगी और अनुशासन से सराबोर माहौल में पली-बढ़ी नित्या का सफर कभी भी एक ढर्रे पर चलने वाला नहीं रहा। केमिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद जब उन्होंने एक बड़ी कॉर्पोरेट कंपनी में मैनेजर के रूप में कदम रखा, तो उनके पास एक बेहद सुरक्षित और आलीशान भविष्य सामने था। ढाई साल तक उस चमक-दमक वाली दुनिया को करीब से देखने के बाद भी उनके भीतर का वह इंसान संतुष्ट नहीं था, जो समाज में जमीनी स्तर पर कोई बड़ा बदलाव देखना चाहता था। अंततः, उन्होंने उस आरामदायक नौकरी को अलविदा कहा और देश की सबसे कठिन मानी जाने वाली सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में जुट गईं। साल 2015 की यूपीएससी परीक्षा में जब वे कामयाब हुईं, तो उन्हें खाकी वर्दी की जिम्मेदारी मिली। यह सिर्फ एक नौकरी की शुरुआत नहीं थी, बल्कि एक ऐसी सेवा की शुरुआत थी जो आगे चलकर कई मायनों में मिसाल बनने वाली थी।

करियर का सबसे शानदार अध्याय

आईपीएस पी.डी. नित्या के करियर का सबसे परीक्षा लेने वाला और सबसे शानदार अध्याय तब शुरू हुआ, जब उनकी तैनाती



पी.डी. नित्या, आईपीएस

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख जैसे रणक्षेत्रों में हुई। वह एक ऐसा दौर था जब धारा 370 के हटने के बाद पूरे क्षेत्र में स्थितियां बेहद नाजुक और संवेदनशील बनी हुई थीं। ऐसे माहौल में उन्हें लेह जिले के पहले महिला पुलिस अधीक्षक के रूप में कमान सौंपी

गई। लद्दाख और जम्मू-कश्मीर का वह इलाका सिर्फ आतंकवाद या राजनीतिक उथल-पुथल के लिए ही नहीं जाना जाता, बल्कि वहां की भौगोलिक परिस्थितियां भी इंसानी हौसले की परीक्षा लेती हैं। हाड़ कंपा देने वाली ठंड, ऑक्सीजन की कमी और हर वक्त बदलता सुरक्षा परिदृश्य- इन सबके बीच नित्या ने जिस सूझबूझ का परिचय दिया, उसने सुरक्षा एजेंसियों से लेकर आम जनता तक का दिल जीत लिया।

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने यह साबित किया कि पुलिसिंग सिर्फ लाठी या बंदूक के दम पर नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के साथ भी की जा सकती है। उन्होंने वहां न केवल कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखा, बल्कि पर्यटन पुलिसिंग का एक ऐसा मॉडल तैयार किया जिससे देश-विदेश से आने वाले सैलानियों के मन में सुरक्षा की भावना मजबूत हुई। जब पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी के खौफ से कांप रही थी, तब नित्या ने अग्रिम मोर्चे पर रहकर लद्दाख के दुर्गम गांवों तक राशन और चिकित्सा सहायता पहुंचाने का काम किया। संकट के उस दौर में उन्होंने खाकी का जो मानवीय चेहरा वहां के लोगों को दिखाया, उसने स्थानीय नागरिकों के मन में पुलिस के प्रति अविश्वास की खाई को हमेशा के लिए पाट दिया। जम्मू-कश्मीर के उस बेहद जटिल माहौल में एक महिला अधिकारी का इस तरह निडर और निष्पक्ष होकर काम करना, देश की हर उस बेटी के लिए एक बड़ी प्रेरणा बन गया जो प्रशासनिक सेवाओं में आने का सपना देखती है।

बड़ा संदेश: खाकी में कोई राजा या प्रजा नहीं

शायद यही वजह है कि जब वे लद्दाख और कश्मीर के ऊंचे पहाड़ों से उतरकर मारवाड़ के रेतीले धोरों पर आईं, तो उनकी सादगी का एक ऐसा रूप देखने को मिला जिसने पूरी ब्यूरोक्रेसी को अचंभित कर दिया। जोधपुर ग्रामीण में कमान संभालने के तुरंत बाद जब वे बालेसर थाने के औचक निरीक्षण पर पहुंचीं, तो वहां के पुराने ढर्रे और वीआईपी संस्कृति पर उनका सीधा प्रहार देखने को मिला। थाने में उनके स्वागत के लिए बकायदा लाल कालीन (रेड कार्पेट) बिछाया गया था और गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी के लिए एक ऊंचा मंच (VIP पोडियम) सजाया गया था। राजशाही ठाठ-बाठ वाली इस औपचारिकता को देखते ही इस जांबाज अधिकारी का मिजाज भांप गया। उन्होंने बिना किसी तामझाम के, उस लाल कालीन को दरकिनार कर दिया और सलामी के लिए सजे उस ऊंचे मंच को अपने पैर से सरकाते हुए हटवा दिया। वे किसी विशेष ऊंचे चबूतरे पर खड़े होने के बजाय, नीचे मिट्टी पर अपने जवानों के समानांतर खड़ी हुईं और बेहद सादगी से सलामी ली। इस एक छोटे से कदम ने सोशल मीडिया से लेकर प्रशासनिक गलियारों तक एक बहुत बड़ा और मौन संदेश दे दिया कि खाकी में कोई राजा या प्रजा नहीं होती, असली लीडरशिप मंचों से नहीं बल्कि व्यवहार से तय होती है।

आज यही तजुर्बा और यही जमीन से जुड़ाव राजस्थान के जोधपुर ग्रामीण इलाके में देखने को मिल रही है। मारवाड़ की धरती पर अवैध मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध हथियारों का नेटवर्क हमेशा से पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती रहा है। लेकिन जब से उन्होंने यहां कमान संभाली है, अपराधियों और तस्करों के हौसले पस्त नजर आ रहे हैं। उनके काम करने का अंदाज बिल्कुल सीधा है- राजनीतिक दबावों से कोसों दूर रहकर सिर्फ और सिर्फ कानून के मुताबिक काम करना। ग्रामीण इलाकों में आम जनता, खासकर महिलाओं के भीतर पुलिस का जो डर होता है, उसे दूर करने के लिए उन्होंने थानों के दरवाजे सीधे जनता के लिए खोल दिए हैं। वे खुद ग्रामीण चौपालों और जन-सुनवाइयों के जरिए लोगों से सीधे जुड़ती हैं, जिससे अपराधियों में खौफ और आम नागरिक में सुरक्षा का अहसास गहरा हुआ है।

लोक सेवक का काम ही उसकी असली पहचान

एक इंजीनियर की तार्किक सोच और एक संवेदनशील इंसान का दिल- इन दोनों के मेल ने पी.डी. नित्या को आज के दौर का एक बेहद प्रभावशाली और सम्मानित अधिकारी बना दिया है। वे अपनी निजी जिंदगी को लाइमलाइट की चकाचौंध से दूर रखना पसंद करती हैं और उनका मानना है कि एक लोक सेवक का काम ही उसकी असली पहचान होना चाहिए। पब्लिसर फर्स्ट मैगजीन अपने पाठकों के सामने खाकी के इसी गौरवमयी और ईमानदार चेहरे को सलाम करता है, जिसने साबित किया है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो लद्दाख की बर्फीली वादियों से लेकर रेगिस्तान के तपते धोरों तक, हर चुनौती को घुटने टेकने पर मजबूर किया जा सकता है।

लेखक/विश्लेषक -
सत्यनारायण जोशी
प्रधान संपादक - Publisher First
संपर्क नंबर- 9982888857

दातारामगढ़ के 'बाय' गाँव से आसाम की वादियों तक का संघर्ष और जयपुर में औद्योगिक क्रांति की अनूठी दास्तान

मरुधरा की माटी का गौरव, कर्मयोगी सुरेश कुमार उपाध्याय का जीवन सफर

विशेष आलेखः

जयपुर/जोधपुर। सफलता कभी किसी को थाल में सजी-सजाई नहीं मिलती और न ही कोई रातों-रात बुलंदियों को छूता है। इतिहास गवाह है कि दूरगामी विज़न, अटूट आत्मबल और ईमानदारी से किया गया परिश्रम ही किसी साधारण व्यक्ति को एक असाधारण व्यक्तित्व में तब्दील करता है। मरुधरा की माटी के एक ऐसे ही अनमोल रत्न और कर्मयोगी हैं सुरेश कुमार उपाध्याय, जिन्होंने राजस्थान के एक छोटे से गाँव से निकलकर न केवल देश के सुदूर हिस्से को अपनी कर्मभूमि बनाया, बल्कि जब अपनी मातृभूमि ने पुकारा तो लौटकर यहाँ औद्योगिक विकास का एक नया अध्याय लिख दिया।

राजस्थान के सीकर जिले के दातारामगढ़ पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाले छोटे से गाँव 'बाय' में एक बेहद संस्कारी परिवेश में सुरेश कुमार उपाध्याय का बचपन बीता। उनके पिता कीर्तिशेष (स्वर्गीय) जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय और पूज्य माता कीर्तिशेष (स्वर्गीय) छोटी देवी ने उन्हें जीवन के वे मूल्य और संस्कार दिए, जो आगे चलकर उनके जीवन का सबसे बड़ा संबल बने। गाँव की सरकारी स्कूल की गलियों से पढ़ाई शुरू कर उन्होंने वाणिज्य संकाय में स्नातक (बीकॉम) की डिग्री हासिल की। उच्च शिक्षा के बाद जीवन में कुछ बड़ा करने का संकल्प और आँखों में नए सपने लेकर युवा सुरेश उपाध्याय ने साल 1976 में देश के पूर्वोत्तर राज्य आसाम की ओर रुख किया।

संघर्षों को ही अपना सबसे बड़ा शिक्षक

आसाम की अनजान वादियों में बिना किसी गॉडफादर के शुरुआत करना बेहद चुनौतीपूर्ण था, लेकिन सुरेश जी ने संघर्षों को ही अपना सबसे बड़ा शिक्षक मान लिया। उन्होंने सबसे पहले एक छोटी सी ग्रोसरी शॉप (किराने की दुकान) से अपने व्यापारिक सफर की नींव रखी। काम के प्रति समर्पण और उनकी व्यापारिक सूझबूझ का नतीजा था कि देखते ही देखते उन्होंने चाय पत्ती का बड़ा होलसेल बिजनेस स्थापित कर लिया। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। व्यापार का विस्तार करते हुए



सुरेश कुमार उपाध्याय

उन्होंने ट्रांसपोर्टेशन और फिर टिंबर (लकड़ी) के बिजनेस में कदम रखा। आसाम में उनकी फर्म और उनके नाम की साख इस कदर स्थापित हुई कि वे प्रवासी राजस्थानियों के बीच एक मार्गदर्शक बनकर उभरे। पूर्वोत्तर में उनके बढ़ते व्यापारिक प्रभाव, सामाजिक कद और वहां की तत्कालीन संवेदनशील परिस्थितियों को देखते हुए आसाम सरकार द्वारा उन्हें हाई सिक्योरिटी (उच्च स्तरीय सुरक्षा) प्रदान की गई थी, जो उनके राष्ट्रव्यापी महत्व और रसूख का एक बड़ा प्रमाण थी।

इस सफल व्यापारिक यात्रा के पीछे उनके पारिवारिक मोर्चे का भी बड़ा योगदान रहा। फतेहपुर शेखावाटी में उनका ससुराल और कुदन (सीकर) में उनका ननिहाल है, जहाँ के संस्कारों ने उनके जीवन को समृद्ध किया। उनकी धर्मपत्नी संतोष देवी ने हर उतार-चढ़ाव में परछाई की तरह उनका साथ दिया। आज उनका परिवार दो बेटों मनोज व पंकज और एक बेटी अनिता के साथ पूरी तरह

सुशिक्षित और सुसंस्कृत है, जो पिता के पदचिह्नों पर आगे बढ़ रहा है।

"एमपीके स्टील प्राइवेट लिमिटेड कंपनी" की स्थापना

कहते हैं कि एक प्रवासी मारवाड़ी चाहे दुनिया के किसी भी कोने में चला जाए, उसका दिल हमेशा अपनी मातृभूमि के लिए ही धड़कता है। ऐसा ही कुछ साल 2000 में हुआ, जब राजस्थान सरकार ने दुनिया भर में बैठे अप्रवासी राजस्थानियों को अपनी माटी में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया। जयपुर में आयोजित उस ऐतिहासिक चार दिवसीय भव्य कार्यक्रम ने सुरेश उपाध्याय के भीतर छिपे देशभक्ति और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य बोध को जगा दिया। मुख्यमंत्री के आमंत्रण का मान रखते हुए उन्होंने तत्काल राजस्थान की राजधानी जयपुर में ₹एमपीके स्टील प्राइवेट लिमिटेड कंपनी₹ की स्थापना कर दी। यह केवल एक स्टील प्लांट या बिजनेस नहीं था, बल्कि राजस्थान के सैकड़ों स्थानीय युवाओं को रोजगार देने और राज्य को औद्योगिक रूप से मजबूत करने का एक भगीरथ प्रयास था। उनके इस अभूतपूर्व औद्योगिक योगदान और बेहतरीन कार्यप्रणाली को देखते हुए राजस्थान सरकार ने उन्हें एक के बाद एक, कुल तीन प्रतिष्ठित राज्य स्तरीय सम्मानों से नवाजा, जो उनकी साख पर सरकारी मुहर थी। अपनी इसी साख और औद्योगिक अनुभव के कारण वे वर्तमान में भी राजस्थान सरकार के महत्वाकांक्षी वैश्विक निवेश मंच ('राइजिंग राजस्थान')
में एक बेहद विशेष और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जहाँ वे राज्य में नए निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।

ब्राह्मण महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष का पदभार संभाला

व्यापारिक जगत से सम्मानपूर्वक निवृत्त होने के बाद जब समाज को एक अनुभवी, निष्कलंक और मजबूत नेतृत्व की जरूरत महसूस हुई, तो समाज के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने उनसे नेतृत्व संभालने का आग्रह किया। समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने इस जिम्मेदारी को स्वीकार किया और अखिल भारत वर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभा के राजस्थान प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष का पदभार संभाला। प्रांतीय अध्यक्ष बनते ही उन्होंने पूरे राजस्थान में गुर्जरगौड़ समाज को एकजुट करने के लिए दिन-रात एक कर दिया। हालांकि, बाद के दिनों में महासभा की कुछ गलत नीतियों और वैचारिक मतभेदों के चलते उन्होंने स्वाभिमान के साथ प्रांतीय अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। लेकिन पद छूटा है, समाज के प्रति उनका समर्पण नहीं। वे आज भी समाज के उत्थान, शिक्षा, चिकित्सा और हर सुख-दुख में समाज की सेवा के लिए पूरी तत्परता और संवेदनशीलता के साथ धरातल पर सक्रिय हैं।

एक जीवंत प्रेरणा

'Publisher First' मासिक पत्रिका का यह वार्षिक विशेषांक ऐसे ही कर्मवीर को सलाम करता है। सुरेश कुमार उपाध्याय का जीवन यह सिखाता है कि जब सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी व्यक्ति के कदम अपनी माटी से जुड़े रहते हैं और उसकी कमाई का एक बड़ा हिस्सा समाज कल्याण में लगता है, तभी वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवंत प्रेरणा बनता है। उनका यह सफर मरुधरा और समाज के गौरवमयी इतिहास का एक अमिट और चमकता हुआ पन्ना है।

लेखक/विश्लेषक -
सत्यनारायण जोशी
प्रधान संपादक - Publisher First
संपर्क नंबर- 9982888857

क्या आप जानते हैं...?

देवदूत बनकर सामने आए भामाशाह

हल्दीघाटी के लंबे संघर्ष के बाद महाराणा प्रताप के पास संसाधनों और धन की भारी कमी हो गई थी। सेना बिखर रही थी और परिवार को जंगलों में भटकना पड़ रहा था। ऐसे सबसे कठिन समय में मेवाड़ के मंत्री और कोषाध्यक्ष भामाशाह देवदूत बनकर सामने आए। (सोर्स- एआई)
पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका

भावपूर्ण संदेश

मिट्टी से जुड़े कदम, संस्कारों से संवरा व्यक्तित्व

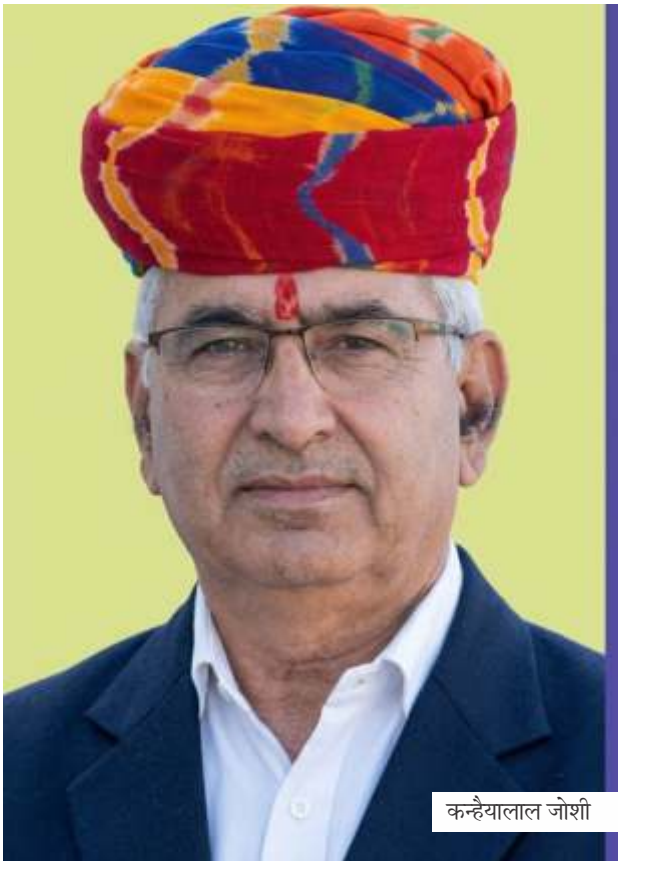
बालेसर (भांडू चारणान) के किसान पुत्र का उड़ीसा की गलियों से लेकर फलोदी को औद्योगिक हब बनाने और 'सोनामुखी किंग' कहलाने तक का अद्भुत सफर

फलोदी/जोधपुर। जीवन में जब चुनौतियाँ और संकट एक साथ रास्ता रोककर खड़े हो जाएँ, तब या तो इंसान टूट जाता है या फिर अपने हौसले से एक नया इतिहास रच देता है। मारवाड़ की वीर और उद्यमी माटी ने ऐसे कई नायकों को जन्म दिया है जिन्होंने अपनी मेहनत, ईमानदारी और दूरगामी सोच के बल पर न केवल अपनी तकदीर बदली, बल्कि पूरे समाज और क्षेत्र की तस्वीर को बदलकर रख दिया। 'Publisher First' मासिक पत्रिका के इस वार्षिक विशेषांक में हम रूबरू हो रहे हैं एक ऐसे ही अद्वितीय कर्मयोगी से, जिन्होंने अभावों से लड़कर व्यावसायिक ऊंचाइयों को छुआ और आज मरुधरा में औद्योगिक क्रांति का एक बड़ा चेहरा बन चुके हैं। हम बात कर रहे हैं—गौतम सभा फलोदी के जिला अध्यक्ष, प्रखर युवा हितैषी और सफल उद्योगपति कन्हैयालाल जोशी की।

कभी न हार मानने के संस्कार

कन्हैयालाल जोशी का जीवन और उनका व्यक्तित्व मारवाड़ के गहरे पारिवारिक मूल्यों और सनातन संस्कारों से सींचा गया है। वे मूल रूप से जोधपुर जिले के बालेसर तहसील के अंतर्गत आने वाले पैतृक गाँव भांडू चारणान के रहने वाले हैं। एक साधारण और ईमानदार किसान परिवार में जन्मे कन्हैयालाल जी के पिता सिरेमल जोशी ने उन्हें जीवन में ईमानदारी, परिश्रम और कभी न हार मानने के संस्कार दिए। एक किसान पुत्र के रूप में गाँव के सरकारी और साधारण परिवेश में उनका बचपन बीता। उन्होंने साल 1984 में 11वीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण की। स्कूली शिक्षा के बाद जीवन में कुछ बड़ा करने और परिवार को आर्थिक संबल देने का सपना लेकर युवा कन्हैयालाल जोशी ने देश के पूर्वी राज्य उड़ीसा की ओर रुख किया।

साधारण नौकरी से अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की



कन्हैयालाल जोशी

उड़ीसा की अनजान राहों पर शुरुआत करना आसान नहीं था। उन्होंने वहाँ एक कपड़े की दुकान में साधारण नौकरी से अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की। नौकरी के दौरान उन्होंने व्यापार की बारीकियों, ग्राहकों के व्यवहार और बाजार के उतार-चढ़ाव को बहुत करीब से और गहराई से सीखा। करीब 8 साल तक सुदूर राज्य में कड़ा परिश्रम करने के बाद, साल 1992 में वे अपनी मातृभूमि के प्रति खिंचाव के चलते वापस अपने गाँव लौट आए। गाँव आकर उन्होंने एक छोटी सी किराने की दुकान की शुरुआत की। ग्रामीण परिवेश में दुकानदारी आसान नहीं होती, व्यावहारिक संबंधों के चलते देखते ही देखते बाजार में काफी उधारी हो गई। आर्थिक संकट गहराने

लगा, लेकिन कन्हैयालाल जी के भीतर एक ऐसा जुझारू व्यक्तित्व छिपा था जो हार मानना जानता ही नहीं था। उन्होंने संकटों को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बना लिया।

कृषि इतिहास का एक युगांतरकारी मोड़

साल 1998 कन्हैयालाल जोशी के जीवन और पूरे मारवाड़ के कृषि इतिहास का एक युगांतरकारी मोड़ साबित हुआ। उन्होंने पारंपरिक खेती से इतर किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए 'सोनामुखी' (सेनापत्ती) की खेती करवाने का एक अनूठा बीड़ा उठाया। उन्होंने जोधपुर, फलोदी और आस-पास के सीमांत क्षेत्रों के किसानों के बीच जाकर अलख जगाई, उन्हें बंजर और कम पानी वाली जमीन पर सोनामुखी उगाने के लिए प्रेरित किया और स्वयं उन्नत किस्म के बीजों का वितरण किया। उनकी इस दूरदर्शी सोच का ही नतीजा था कि जो किसान कभी कर्ज के जाल में फंसे थे, वे सोनामुखी की नकद फसल से समृद्ध होने लगे और देखते ही देखते कन्हैयालाल जोशी को मारवाड़ में 'सोनामुखी किंग' के रूप में एक नई पहचान मिली।

व्यापारिक दूरदर्शिता उन्हें साल 2005 में फलोदी खींच लाई। फलोदी आकर उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र की दिशा ही बदल दी। उन्होंने यहाँ की 'खीचन Industries' के विकास और उसे आधुनिक स्वरूप देने में मुख्य सूत्रधार की भूमिका निभाई। उनके कुशल प्रबंधन और मेहनत की बदौलत ही आज 'सनसिटी' औद्योगिक ब्रांड पूरे प्रदेश में अपनी साख और गुणवत्ता के लिए स्थापित हो चुका है। औद्योगिक विस्तार की इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने बीकानेर जिले के दियातरा गाँव में एक भव्य कॉटन मिल (रूई फैक्ट्री) की स्थापना की, जिसने क्षेत्र के सैकड़ों स्थानीय लोगों को सीधे रोजगार से जोड़ा। कन्हैयालाल जोशी का यह औद्योगिक विज़न वर्तमान में भी पूरी रफ्तार से दौड़ रहा है, जहाँ राजस्थान सरकार के महत्वाकांक्षी वैश्विक निवेश मंच 'राइजिंग राजस्थान' के तहत उन्होंने एक बड़े प्लांट को धरातल पर उतार दिया है और दूसरे प्लांट की स्थापना की तैयारियाँ युद्ध स्तर पर चल रही हैं। वे स्वयं आगे बढ़कर सरकार की औद्योगिक कल्याणकारी योजनाओं का जमकर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं ताकि मरुधरा का हर युवा उद्यमी बन सके।

गाय की सेवा से घर में सकारात्मकता आती है

इतना बड़ा बिजनेस और औद्योगिक साम्राज्य होने के बावजूद भी कन्हैयालाल जोशी आज जमीन से जुड़े इंसान हैं। उनकी सादगी का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज भी उनके फलोदी स्थित निवास स्थान पर घर के आगे एक विशाल गौशाला का बाड़ा बना हुआ है, जहाँ वे एक दर्जन से अधिक गायों की सेवा और पालन-पोषण करते हैं। सबसे अनुकरणीय बात यह है कि इस गौशाला में गौ-सेवा के लिए कोई बाहरी नौकर नहीं, बल्कि खुद कन्हैयालाल जी, उनकी धर्मपत्नी या उनकी बहू अपने हाथों से गायों की सार-संभाल करती हैं। कन्हैयालाल जोशी बड़े गर्व से कहते हैं कि- "अपने आपको गौ सेवक कहने या बाहर लंबी-चौड़ी बातें करने से पहले, हर इंसान को अपने घर में कम से कम एक गाय रखनी चाहिए। गाय की सेवा से घर में सकारात्मकता आती है, शुद्ध आहार मिलता है और मनुष्य पूरी तरह निरोग रहता है।"

अन्न की बर्बादी रोकने के लिए अनूठा अभियान

उनकी इसी जमीनी सोच और जनसरोकार का एक और जीवंत उदाहरण समाज ने तब देखा जब अध्यक्ष बनने से पहले उन्होंने अन्न की बर्बादी को रोकने के लिए एक बहुत बड़ा अनूठा सामाजिक अभियान चलाया। समाज में कहीं पर भी उन्हें शादी, ब्याह या अन्य किसी भी सामाजिक कार्यक्रम का निमंत्रण मिलता, तो वे वहां अपनी पूरी टीम के साथ समय से पहले पहुंच जाते। वे उस आयोजन स्थल और भोजन पांडाल में चारों तरफ बड़ी-बड़ी तख्तियां लगा देते थे, जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा होता था।

₹खाओ मण, छोड़ो मत एक कण₹। वे सिर्फ तख्तियां लगाकर बैठते नहीं थे, बल्कि खुद आगे बढ़कर पंगत में परोसकारी (भोजन परोसने) का काम करने लग जाते थे। वे भोजन करने आए लोगों को बहुत आत्मीयता से निर्देशित करते थे कि जितनी भूख हो, जितनी जरूरत हो, उतना ही थाली में डलवाएं, कोई भी भोजन का एक भी कण झूठा नहीं छोड़ेगा। कन्हैयालाल जी का यह अभियान पूरे क्षेत्र में इतना व्यावहारिक और असरदार रहा कि लोगों ने शादियों में फिजूलखर्ची और अन्न की बर्बादी को लेकर आत्ममंथन करना शुरू कर दिया।

उनके इस सफल और प्रेरणादायी सफर के पीछे उनके पारिवारिक और आध्यात्मिक मोर्चे का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। भालू रतनगढ़ (जोधपुर) में उनका ससुराल है, जहाँ के

उच्च संस्कारों ने उनके जीवन को एक नई गहराई दी। उनकी धर्मपत्नी भी एक अत्यंत धार्मिक, सात्विक और सेवाभावी प्रवृत्ति की महिला हैं, जिन्होंने हर कठिन मोड़ पर एक परछाई की तरह उनका साथ दिया और परिवार को संजोया। आज उनका परिवार एक बेटे और एक बेटी के साथ पूरी तरह सुशिक्षित और सुसंस्कृत है।

व्यावसायिक सफलताओं के साथ-साथ कन्हैयालाल जोशी का दिल हमेशा समाज के युवाओं और अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के कल्याण के लिए धड़कता रहा है। वे युवाओं के हक, उनकी शिक्षा और उनके रोजगार के लिए हमेशा तत्पर रहे। उनकी इसी निष्कलंक छवि, सामाजिक सक्रियता और युवाओं के प्रति उनके अगाध प्रेम को देखते हुए फलोदी जिले के गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज के तमाम वरिष्ठजन और युवा एकजुट होकर उनके पास पहुँचे और उनसे नेतृत्व संभालने का आग्रह किया। समाज के इस भरोसे का मान रखते हुए उन्होंने जिम्मेदारी स्वीकार की और 'गौतम सभा फलोदी' के जिला अध्यक्ष का पदभार संभाला। फलोदी में गौतम सभा के पास शहर के मुख्य और प्राइम लोकेशंस पर बेशकीमती संपत्तियाँ मौजूद हैं। अध्यक्ष बनते ही कन्हैयालाल जोशी ने अपनी संगठनात्मक कुशलता का परिचय दिया और समाज के बड़े-बड़े भामाशाहों को एक जाजम पर लाकर इन संपत्तियों के विकास, जीर्णोद्धार और सामाजिक उपयोगिता में चार चांद लगा दिए। आज उनके नेतृत्व में समाज संगठित, सशक्त और प्रगतिशील होकर आगे बढ़ रहा है।

'Publisher First' मासिक पत्रिका का यह वार्षिक विशेषांक ऐसे ही विरले कर्मवीर और माटी के सपूत को कोटि-कोटि नमन करता है। कन्हैयालाल जोशी का संपूर्ण जीवन एक खुली किताब की तरह है जो नई पीढ़ी को सिखाता है कि जब इरादे पवित्र हों और संकल्प अडिग, तो एक किसान की झोपड़ी से निकलकर भी उद्योगों का साम्राज्य खड़ा किया जा सकता है और समाज के सिरमौर बना जा सकता है। उनका यह सफरनामा मरुधरा और समाज के गौरवमयी इतिहास का एक अमिट, स्वर्णिम और अत्यंत प्रेरणादायक अध्याय है।

सत्यनारायण जोशी, प्रधान संपादक
- Publisher First
संपर्क नंबर- 9982888857



विशेष आलेख

वास्तविक सफलता समृद्धि के पीछे छिपे संस्कारों में होती है

युवा उद्यमी कैलाश जोशी: संघर्ष, आत्मबल और सामाजिक सरोकार की एक अनूठी गाथा

समकालीन दौर में सफलता की परिभाषा अक्सर बैंक बैलेंस, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के टर्नओवर और महानगरीय चकाचौंध तक सीमित कर दी गई है। लेकिन वैचारिक धरातल पर इतिहास गवाह है कि वास्तविक सफलता केवल आर्थिक समृद्धि से नहीं, बल्कि उस समृद्धि के पीछे छुपे संस्कारों, मानवीय व्यवहार और अपनी जड़ों के प्रति अटूट निष्ठा से मापी जाती है। कुछ व्यक्तित्व अपनी सफलताओं से केवल स्वयं का साम्राज्य खड़ा करते हैं, जबकि कुछ विरले अपनी यात्रा से पूरे समाज के लिए प्रेरणापुंज बन जाते हैं। 'Publisher First' के इस विशेष स्तंभ में आज कहानी एक ऐसे ही कर्मयोगी की, जिन्होंने मारवाड़ की माटी से निकलकर व्यापार जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई, लेकिन सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी अपनी संस्कृति और समाज को कभी ओझल नहीं होने दिया। हम बात कर रहे हैं- युवा उद्यमी और भामाशाह कैलाश जोशी की।

दो विधानसभाओं का अपनत्व: सामराऊ की विरासत और ओस्तरा की माटी

कैलाश जोशी के जीवन और उनके व्यक्तित्व का ताना-बाना मारवाड़ की दो बेहद प्रतिष्ठित विधानसभाओं—ओसियां और भोपालगढ़ से मिलकर बुना गया है। वे मूल रूप से ओसियां विधानसभा के ऐतिहासिक गाँव सामराऊ (मातामाली) के मूल निवासी हैं, जहाँ से उनका परिवार बाद में भोपालगढ़ विधानसभा के ओस्तरा गाँव में आकर बस गया। कैलाश जोशी का जन्म इसी ओस्तरा की पावन धरा पर हुआ। वर्तमान में भले ही वे व्यावसायिक रूप से महानगरों में स्थापित हैं, लेकिन उनका अपनी पैतृक संस्कृति और कुल-परंपरा से जुड़ाव ऐसा है कि सामराऊ की मिट्टी से आज भी उनका उतना ही गहरा ताल्लुक और अपनत्व है जितना कि उनकी जन्मभूमि ओस्तरा से।

'भव्य ट्रेडिंग कंपनी': भाइयों का संबल और कड़े परिश्रम का सफर

एक संयुक्त और संस्कारी भारतीय परिवार की ताकत क्या होती है, इसे जोशी परिवार को देखकर समझा जा सकता है। परिवार में चार भाई हैं- राजेश जोशी, संतोष जोशी, अर्जुन जोशी और


कैलाश जोशी

कैलाश जोशी। चारों भाइयों में सबसे छोटे और लाडले कैलाश ने कभी भी अपने भाइयों के स्नेह और बड़ों के मार्गदर्शन को ओझल नहीं होने दिया।

अत्यंत साधारण परिवेश में पले-बढ़े कैलाश ने अभावों और संघर्षों को कभी अपनी दुर्बलता नहीं बनने दिया। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत नौकरी से की, व्यापार की बारीकियों को बहुत गहराई से सीखा और फिर अपने प्रखर आत्मविश्वास, भाइयों के सामूहिक आशीर्वाद तथा दूरगामी व्यावसायिक सोच के बल पर ₹भव्य ट्रेडिंग कंपनी₹ नामक फर्म की स्थापना की। आज उनकी यह फर्म देश के बड़े व्यापारिक केंद्रों- सूरत और रायपुर- के वस्त्र व्यवसाय जगत में अपनी एक विशिष्ट साख और विश्वसनीयता स्थापित कर चुकी है। व्यावसायिक विकास ने उन्हें आर्थिक रूप से समृद्ध तो बनाया, लेकिन उनके स्वभाव की तरलता और सरलता आज भी वैसी ही अक्षुण्ण है, जैसी गाँव की माटी से जुड़े एक सामान्य व्यक्ति की होती है। उनके पिता श्री सोमराज जोशी द्वारा दिए गए मूल्य ही आज इस पूरे परिवार की सबसे बड़ी पूँजी हैं।

'माटी का कर्ज' और भव्य गृह प्रवेश

वर्तमान दौर में जहाँ अमूमन लोग महानगरों की चकाचौंध में बसने

के बाद अपनी जन्मभूमि और पैतृक परिवेश से विमुख हो जाते हैं, वहीं कैलाश जोशी ने अपने पैतृक गाँव ओस्तरा में ₹गीता कुंज-सोम निकुंज₹ जैसे एक भव्य और कलात्मक आवास का निर्माण कर समाज को यह मर्मस्पर्शी संदेश दिया कि मनुष्य चाहे ब्रह्मांड के किसी भी कोने में पहुँच जाए, उसकी असली पहचान उसकी जड़ें ही होती हैं।

24 जून 2026 को आयोजित उनका 'मंगल गृह प्रवेश महोत्सव' केवल एक पारिवारिक मांगलिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह संपूर्ण क्षेत्र के लिए एक विराट सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्सव में तब्दील हो गया।

सनातन परंपरा और सामाजिक समरसता का महासंगम

इस भव्य समारोह में गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज के आराध्य देव, न्यायशास्त्र के प्रणेता अक्षपाद महर्षि गौतम ऋषि की पावन चरण पादुका का पूर्ण वैदिक मंत्रोच्चार, विधि-विधान और अपार श्रद्धा के साथ स्वागत एवं पूजन किया गया। भगवान त्र्यंबकेश्वर की पावन धरा से प्रारंभ हुई इस आध्यात्मिक यात्रा की उपस्थिति ने संपूर्ण आयोजन को एक दिव्य गरिमा प्रदान की।

समारोह के दौरान आयोजित धर्मसभा में पधारे पूज्य संत-महात्माओं ने सनातन संस्कृति के संरक्षण, गौ-सेवा, नशामुक्त समाज के निर्माण और सामाजिक समरसता पर अत्यंत ओजस्वी एवं प्रेरक विचार साझा किए। पूरा परिवेश वैदिक ऋचाओं, भजनों और सत्संग के दिव्य प्रवाह से सराबोर रहा।

इस समागम की सबसे अनूठी और विहंगम विशेषता छत्तीस कौम की अभूतपूर्व सहभागिता रही। समाज के विभिन्न संतों, वरिष्ठ जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्ध शिक्षाविदों, प्रतिष्ठित उद्योगपतियों, प्रवासी मारवाड़ी समाज के अग्रगण्य प्रतिनिधियों तथा गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज के युवा व मातृशक्ति की विशाल उपस्थिति यह दर्शाती थी कि यह केवल एक औपचारिकता का निमंत्रण नहीं था, बल्कि कैलाश जोशी द्वारा वर्षों से संचित किए गए अटूट विश्वास, आत्मीयता और गहरे सामाजिक सरोकारों का प्रतिफल था।

अंत्योदय और जनसेवा का जीवंत संकल्प

कैलाश जोशी ने इस मांगलिक अवसर को केवल आत्म-उत्सव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को रेखांकित करते हुए एक अनुकरणीय मिसाल पेश की। उन्होंने गौतम सभा, जोधपुर द्वारा समाजहित में निर्माणाधीन "अहिल्या आरोग्य भवन" (चिकित्सा एवं सेवा केंद्र) के लिए 1,00,000 (एक लाख रुपये) की सहयोग राशि सहर्ष समर्पित की। उनका यह योगदान केवल एक वित्तीय सहायता नहीं है, बल्कि उस सनातन सोच का परिचायक है जो यह मानती है कि मनुष्य की समृद्धि तभी सार्थक है, जब उसका एक हिस्सा समाज के कल्याण और उत्थान में काम आए।

नई पीढ़ी के लिए एक आदर्श रोडमैप

आज की युवा पीढ़ी, जो सफलता के शॉर्टकट ढूंढती है, यदि वह कैलाश जोशी की इस यात्रा का निष्पक्ष विश्लेषण करे, तो उसे जीवन का एक अत्यंत गंभीर संदेश मिलेगा। यह जीवन गाथा सिखाती है कि सफलता केवल धन के अंबार का नाम नहीं है। सफलता तब पूर्ण होती है जब-

- व्यावसायिक साख के साथ-साथ परिवार का गौरव और भाइयों का मान बढ़े।
- हर बड़े निर्णय में माता-पिता, बड़े भाइयों और गुरुजनों का आशीर्वाद अंतर्निहित हो।
- अपनी पैतृक संस्कृति, सनातन मूल्यों और गौरवमयी इतिहास पर गर्व हो।
- और सबसे महत्वपूर्ण, अपनी उन्नति में समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने का भाव हो।

'Publisher First' का संपादकीय दृष्टिकोण

'Publisher First' मासिक पत्रिका का यह सुदृढ़ विश्वास है कि राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य का मार्ग ऐसे ही वैचारिक रूप से समृद्ध युवा उद्यमियों के पुरुषार्थ से प्रशस्त होता है, जो उद्योग के साथ संस्कार, व्यापार के साथ शुचिता और व्यक्तिगत सफलता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों को समान महत्व देते हैं।

गुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभा युवक संघ (निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष, गुजरात) के रूप में उनके सांगठनिक नेतृत्व, बड़े भाई राजेश, संतोष, अर्जुन जोशी के सहयोग और उनकी इस प्रेरक जीवन-यात्रा को देखकर यह पूरी तरह आश्वस्त हुआ जा सकता है कि आने वाले समय में कैलाश जोशी न केवल व्यापार जगत में 'भव्य ट्रेडिंग कंपनी' के माध्यम से नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे, बल्कि समाज सेवा, युवा संगठन और जनकल्याण के क्षेत्र में भी ओसियां से लेकर भोपालगढ़ और संपूर्ण मरुधरा के एक बड़े प्रेरणापुंज बनकर उभरेंगे। जब सफलता का आधार अपनी माटी से जुड़ा रहता है, तभी वह कालजयी बनती है- और कैलाश जोशी इसी जीवंत प्रेरणा का एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

सत्यनारायण जोशी,
प्रधान संपादक - Publisher First,
संपर्क नंबर- 9982888857

गांव की बहू इन्द्रा देवी छाबा: टांगला पंचायत की सरपंच ने रचा विकास का नया इतिहास

विशेष संस्मरणात्मक आलेख - ग्रामीण अंचल से सीधी रिपोर्ट

अनुभूति और विमर्श

जब किसी गांव की मिट्टी में बदलाव की सुगबुगाहट शुरू होती है, तो वह केवल सीमेंट की सड़कों, पक्के मकानों या साफ-सुथरी नालियों के रूप में ही नहीं दिखती। असली बदलाव तो वहां के लोगों की आंखों की चमक, उनके आत्मसम्मान और उनकी बदली हुई सोच में महसूस होता है। नागौर जिले की जायल पंचायत समिति के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत टांगला में इन दिनों कुछ ऐसा ही आत्मीय बदलाव महसूस किया जा सकता है। इस पूरे परिवेश को एक नया जीवन और संबल देने का काम किया है वहां की बहू और सरपंच इन्द्रा देवी छाबा ने, जिन्होंने विकास को महज सरकारी फाइलों का हिस्सा न मानकर, उसे मानवीय संवेदनाओं की कसौटी पर कसा है।

एक वक्त था जब इन्द्रा देवी इस गांव की चौखट पर एक संकोची बहू के रूप में आई थीं। घूंघट के पीछे से गांव के सुख-दुख को देखने वाली इस बहू को जब गांव के लोगों ने विश्वास जताकर सरपंच की जिम्मेदारी सौंपी, तो उनके सामने दो रास्ते थे- या तो वे राजनीति के ढर्रे पर चलकर एक पारंपरिक जनप्रतिनीधि बन जातीं, या फिर इस पद को पूरे गांव के प्रति अपने मातृत्व और कर्तव्य का जरिया बना लेतीं। उन्होंने दूसरा रास्ता चुना। उनके



लिए सरपंच का पद कोई रुतबा या अधिकार नहीं, बल्कि उस गांव का कर्ज उतारने का जरिया था, जिसने उन्हें कभी पलकों पर बिठाकर अपनी बहू स्वीकार किया था। आज वे किसी एक घर की नहीं, बल्कि पूरे टांगला की साझी उम्मीद बन चुकी हैं।

टांगला की गलियों में घूमते हुए साफ अहसास होता है कि यहां विकास सिर्फ कागजी दावों में नहीं, बल्कि लोगों के रोजमर्रा के जीवन में सांस ले रहा है। कड़कड़ाती धूप में नरेगा के काम में पसीना बहाते श्रमिकों की खुशहाली, समय पर उनके खातों में आने वाली मजदूरी की राहत और जल संरक्षण के लिए गहरे किए





जा रहे तालाबों की माटी में इस प्रशासनिक संवेदनशीलता को साफ महसूस किया जा सकता है।

हाल ही में जब कुछ अज्ञात शंकाओं के आधार पर उच्चाधिकारियों और लोकपाल ने औचक निरीक्षण किया, तो वहां कोई कमी या बनावटीपन नहीं था। प्रशासनिक अमला भी अचंभित रह गया जब उन्होंने देखा कि हर श्रमिक अपनी पूरी ईमानदारी के साथ धरातल पर काम में जुटा हुआ था। यह पारदर्शिता किसी दबाव का नतीजा नहीं, बल्कि एक बहू के प्रति पूरे गांव के विश्वास और जुड़ाव का जीवंत प्रमाण थी।

गांव की महिलाओं की झिझक को तोड़ा

एक महिला जब नेतृत्व संभालती है, तो उसकी कार्यशैली में शासन से ज्यादा ममता और अनुशासन का अनोखा मेल देखने को मिलता है। इन्द्रा देवी ने गांव की महिलाओं की झिझक को तोड़ा, उन्हें स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से एक-दूसरे का संबल बनना सिखाया और आत्मनिर्भरता की राह दिखाई। आज जब गांव की बेटियां सुरक्षित माहौल में स्कूलों की दहलीज पार करती हैं, तो शिक्षा के क्षेत्र में हुआ सुधार केवल आंकड़ों में दर्ज नहीं होता, बल्कि उन बेटियों के आत्मनिर्भर भविष्य की नींव बनता है। इसी समर्पण का परिणाम है कि आज इस सुदूर ग्रामीण अंचल की गूंज जयपुर के नीति-नियंताओं तक पहुंची है और राजधानी के सचिवालय की दीवारों पर सजी टांगला पंचायत की तस्वीर पूरे नागौर जिले के आत्मसम्मान को बढ़ा रही है।

सार्वजनिक जीवन की राह कभी भी निष्कंटक नहीं होती। टांगला पंचायत के इस बढ़ते कदमों को रोकने के लिए कई बार ईर्ष्या, झूठी शिकायतों और आरटीआई की आड़ में बाधाएं खड़ी करने की कोशिश की गई। लेकिन सच को किसी बैसाखी या बाहरी सहारे की जरूरत नहीं होती। इन्द्रा देवी ने इन तमाम विरोधों और व्यक्तिगत आक्षेपों का जवाब कभी कड़वाहट या विवाद से नहीं दिया। उनका मानना है कि 'सांच को आंच नहीं' और जनता का दिया हुआ सेवा का अवसर किसी भी प्रकार की नकारात्मक राजनीति से कहीं ऊपर है। उन्होंने विरोधियों की कड़वाहट को भी विकास के मीठे फलों में बदल दिया है।

आने वाले कल के लिए टांगला की इस बहू की आंखों में कई सारे आत्मीय सपने तैर रहे हैं। वे चाहती हैं कि गांव के हर एक घर के आंगन तक शुद्ध और मीठा पानी पहुंचे, ताकि किसी मां-बहन को पानी के लिए दूर न भटकना पड़े। वे हर बच्चे के हाथ में बेहतरीन और आधुनिक शिक्षा देखना चाहती हैं, ताकि गांव का युवा पलायन को मजबूर न हो बल्कि अपनी ही माटी में सम्मानजनक रोजगार पा सके।

टांगला को केवल एक प्रशासनिक आदर्श पंचायत बनाना उनका लक्ष्य नहीं है, बल्कि वे एक ऐसा संवेदनशील समाज रचना चाहती हैं जहां विकास की आखिरी किरण समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। इन्द्रा देवी छाबा की यह यात्रा बताती है कि जब इरादे नेक और भावनाएं पवित्र हों, तो राजनीति भी सेवा का सर्वोच्च रूप ले लेती है।

हर आंख के आंसू पोंछना ही मेरा पहला धर्म

"इस माटी ने मुझे बहू का दर्जा देकर अपना सर्वस्व दिया है। जब गांव के बुजुर्ग मुझे अपनी दुआएं देते हैं और बच्चे मुस्कुराकर देखते हैं, तो मुझे महसूस होता है कि मेरी जिम्मेदारी कितनी बड़ी है। मेरे लिए इस गांव का हर एक घर मेरा अपना है, और हर आंख के आंसू पोंछना ही मेरा पहला धर्म है।"

– **इन्द्रा देवी छाबा**

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

ब्रह्मांडीय संकेत और बदलता समय चक्र

विशेष स्तंभ: - वर्ष 2026-27 का प्रामाणिक खगोलीय विश्लेषण



पंडित जगदीश पंचारिया
संपर्क नंबर- 99836 87943

समय कभी ठहरता नहीं, वह निरंतर गतिमान है। लेकिन जब आकाशमंडल में बड़े ग्रहों की चाल बदलती है, तो उसका सीधा असर धरा पर इंसानी जिंदगी, सत्ता के गलियारों और व्यापारिक बाजारों पर दिखाई देता है। ज्योतिष केवल भाग्य बताने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समय के पदचापों को पहले से भांपने का एक प्राचीन विज्ञान है। 'Publisher First' के इस विशेष वार्षिक अंक में, हम सतही और पारंपरिक भविष्यवाणियों से परे जाकर, वर्तमान ग्रह-गोचरों और खगोलीय युतियों का एक अत्यंत गहरा, शोधपरक और तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। यह आलेख आपको आने वाले समय की चुनौतियों के प्रति सचेत भी करेगा और अवसरों को पहचानने का हौसला भी देगा।

1. सत्ता, संगठन और प्रशासनिक बदलाव: "नेपथ्य में जाएंगे बड़े चेहरे, युवाओं को कमान"

खगोलीय गणना का आधार: आकाशमंडल में इस समय कर्म और न्याय के देवता शनि देव अपनी राशि बदलने की देहरी पर खड़े हैं। वहीं, राहु-केतु की धुरी सत्ता और शासन के महत्वपूर्ण भावों को प्रभावित कर रही है। ज्योतिष शास्त्र में जब भी ऐसे बड़े ग्रहों का गोचर होता है, तो वह व्यवस्था में एक युगांतरकारी परिवर्तन लेकर आता है।

गहन विश्लेषण और भविष्यवाणी: आने वाले महीनों में देश और विशेषकर राज्यों की राजनीति में एक बहुत बड़ा सांगठनिक फेरबदल देखने को मिलेगा। कई ऐसे बड़े और स्थापित चेहरे, जिन्होंने दशकों तक राजनीति की दिशा तय की है, वे अब धीरे-धीरे नेपथ्य (मार्गदर्शक मंडल या सक्रिय राजनीति से दूर) की ओर जाते दिखाई देंगे। उनकी जगह पूरी तरह से नए, ऊर्जावान और वैचारिक रूप से प्रखर युवा चेहरों को बड़ी कमान सौंपी जाएगी।

शासन के स्तर पर 'जीरो टॉलरेंस' (अपराध और भ्रष्टाचार के प्रति कड़ा रुख) की नीति और अधिक कठोर होगी। लोक-लुभावन घोषणाओं के बजाय, सरकारें अब कड़े, नीतिगत और दूरगामी फैसले लेने में संकोच नहीं करेंगी। शुरुआत में इन फैसलों का कुछ विरोध हो सकता है, लेकिन अंततः यह प्रशासनिक तंत्र को एक नई

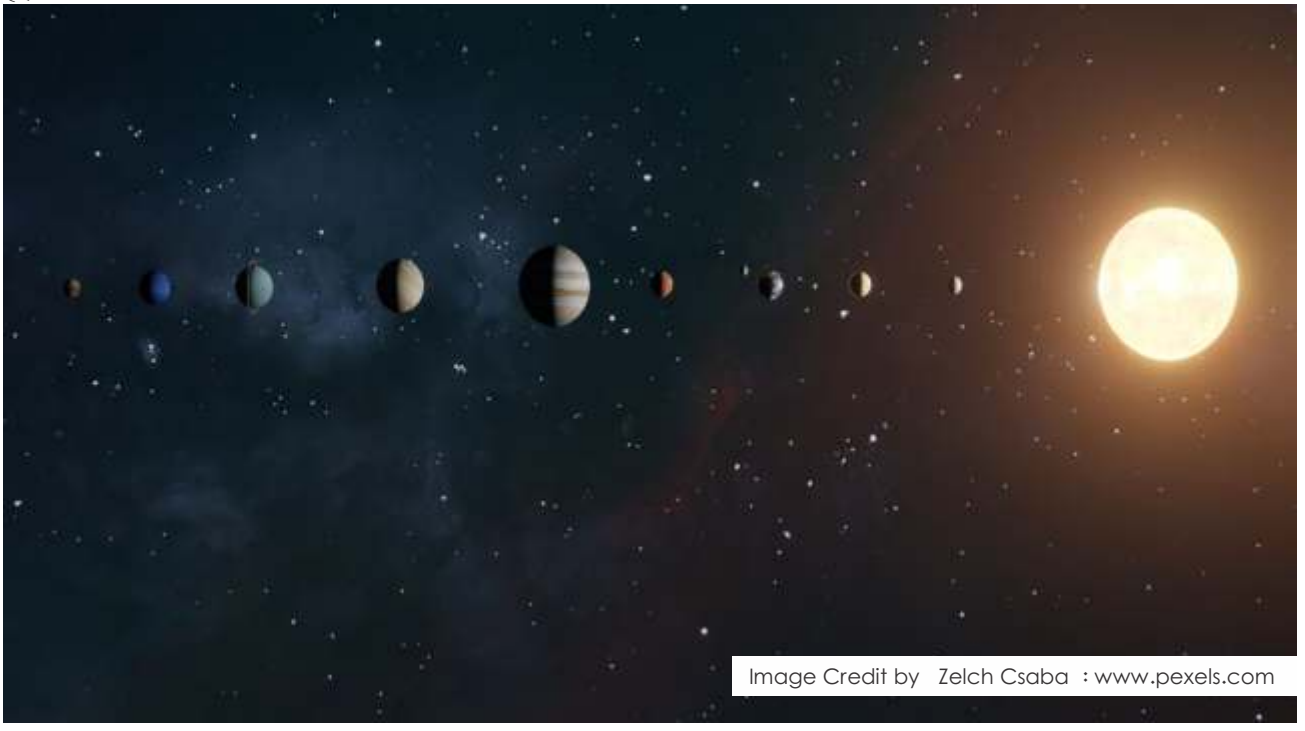


Image Credit by Zelch Csaba : www.pexels.com

गति और शुचिता प्रदान करेगा।

2. आर्थिक जगत और व्यापार: "बाजार में बड़ा सुधार, सोने-चांदी में ऐतिहासिक उछाल"

खगोलीय गणना का आधार: ज्ञान, समृद्धि और धन के कारक देवगुरु बृहस्पति (बृहस्पति) का गोचर और उस पर राहु की आंशिक दृष्टि आर्थिक जगत में एक बड़े मंथन का संकेत दे रही है। जब भी गुरु और राहु का ऐसा प्रभाव बनता है, तो वह बाजार में अति-उत्साह को नियंत्रित करने का काम करता है।

गहन विश्लेषण और भविष्यवाणी: व्यापार और निवेश के लिहाज से यह समय बहुत सोच-समझकर कदम आगे बढ़ाने का है। शेयर बाजार (Stock Market) में इस वर्ष के उत्तरार्ध तक एक बड़ा और अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव (बड़ा करेक्शन या क्रैश) देखने को मिल सकता है। जो लोग सट्टेबाजी या शॉर्टकट से धन कमाने की फिराक में हैं, उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

लेकिन इस मंदी के बीच एक बेहद सकारात्मक पहलू भी सामने आएगा। पारंपरिक और सुरक्षित निवेश के रूप में सोना (Gold) और चांदी अपनी पुरानी सभी सीमाओं को लांघकर एक नया ऐतिहासिक रिकॉर्ड स्थापित करेंगे। धातु, रियल एस्टेट और पारंपरिक कृषि उत्पादों (जैसे मारवाड़ की सोनामुखी व औषधीय फसलें) से जुड़े व्यापारियों के लिए यह समय नए रास्ते खोलेगा। 'राइजिंग राजस्थान' जैसे वैश्विक मंचों के माध्यम से जो औद्योगिक बीज बोए जा रहे हैं, वे इस अवधि में धरातल पर अंकुरित होंगे और छोटे शहरों में नए उद्योगों की बाढ़ आएगी।

3. प्रकृति, मौसम और कूटनीति: "असमय ऋतु परिवर्तन और सीमा पर कड़ा संदेश"

खगोलीय गणना का आधार: अग्नि तत्व के कारक ग्रह मंगल और सूर्य की समय-समय पर बनने वाली क्रूर युति भू-गर्भ और प्रकृति में अचानक हलचल पैदा करती है। यह योग जल और थल दोनों ही मार्गों पर संवेदनशीलता को बढ़ा देता है।

गहन विश्लेषण और भविष्यवाणी: प्राकृतिक दृष्टिकोण से आने वाला समय बहुत अप्रत्याशित रहने वाला है। मौसम का मिजाज तेजी से बदलेगा; जहाँ एक तरफ कुछ क्षेत्रों में असमय भारी बारिश या जल-विपदा जैसी स्थितियाँ पैदा होंगी, वहीं दूसरी तरफ कुछ हिस्सों में सुखाड़ का सामना करना पड़ सकता है। किसानों को अपनी फसलों के चयन में बहुत बुद्धिमानी से काम लेना होगा।

वैश्विक और कूटनीतिक स्तर पर, भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों (विशेषकर पश्चिमी और उत्तरी सीमाओं) पर अचानक कूटनीतिक तनाव या छद्म गतिविधियों में तेजी आ सकती है। देश की सुरक्षा एजेंसियों को बहुत ज्यादा अलर्ट मोड पर रहना होगा। हालांकि, भारत का शीर्ष नेतृत्व अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और त्वरित निर्णयों से इस संकट पर पूरी तरह काबू पा लेगा और दुनिया को एक बहुत कड़ा व स्पष्ट संदेश देने में सफल रहेगा।

4. सामाजिक मानस और स्वास्थ्य: "वैराग्य का उदय, अध्यात्म बनेगा सबसे बड़ा संबल"

खगोलीय गणना का आधार: मोक्ष और आंतरिक खोज के कारक केतु का गोचर इस समय आम जनमानस के मानसिक भावों को प्रभावित कर रहा है। यह स्थिति मनुष्य को बाहरी चकाचौंध से हटाकर भीतर की ओर झांकने के लिए मजबूर करती है।

गहन विश्लेषण और भविष्यवाणी: भौतिक सुख-सुविधाओं और महानगरीय चकाचौंध के चरम पर होने के बावजूद, समाज में एक अजीब सा खालीपन और मानसिक तनाव बढ़ेगा। अनिद्रा, अवसाद और आपसी रिश्तों में बिखराव जैसी समस्याएँ आम होंगी। लेकिन यही संकट मनुष्य को उसकी जड़ों की ओर वापस ले जाएगा।

युवा पीढ़ी और बड़े-बड़े कॉरपोरेट घरानों के लोग बहुत तेजी से सनातन परंपरा, योग, आयुर्वेद, ध्यान और प्राच्य विद्याओं (ज्योतिष व वास्तु) की ओर आकर्षित होंगे। लोग अब केवल धन कमाने की अंधी दौड़ से थककर 'मानसिक शांति' की तलाश करेंगे। इसके परिणामस्वरूप देश में आध्यात्मिक पर्यटन (Spiritual Tourism) एक बहुत बड़े उद्योग के रूप में उभरेगा। प्राचीन तीर्थस्थलों का कायाकल्प होगा और लोग अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर ध्यान केंद्रों और आश्रमों की ओर रुख करेंगे।

संपादकीय दृष्टिकोण: कर्म ही प्रधान है

'Publisher First' इस पूरे विश्लेषण के अंत में अपने पाठकों से यही कहना चाहता है कि ग्रह केवल हमें आने वाले समय की परिस्थितियों का संकेत देते हैं, वे हमारा भाग्य पूरी तरह फ्रीज नहीं करते। सनातन संस्कृति का मूल सिद्धांत है- ₹कर्म प्रधान विश्व करि राखा₹। यदि हमारी नीयत साफ है, हमारे इरादे पवित्र हैं और हम सही समय पर सही निर्णय लेने का पुरुषार्थ दिखाते हैं, तो हम विपरीत से विपरीत ग्रहों के प्रभाव को भी अपने अनुकूल बदल सकते हैं। आने वाला समय सजग रहने का है, अपनी जड़ों से जुड़े रहने का है और पूरे आत्मविश्वास के साथ कर्मपथ पर आगे बढ़ने का है।

वासन्ती ऊर्जा और समृद्धि का विज्ञान - क्या कहता है वास्तुशास्त्र ?

विशेष स्तंभ : वास्तु केवल दिशाओं का ज्ञान नहीं, बल्कि प्रकृति के पंचतत्वों (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश) को अपने अनुकूल बनाकर जीवन में स्वास्थ्य, धन और मानसिक शांति अर्जित करने का एक प्राचीन विज्ञान है। 'Publisher First' के इस विशेष पन्ने में आज हम बात करेंगे उन व्यावहारिक और अचूक वास्तु नियमों की, जिन्हें अपनाकर आप अपने घर और कार्यक्षेत्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सकते हैं।



Image Credit by Vishwanth PindiBoina : www.pexels.com

1. प्रवेश द्वार: जहाँ से आती है लक्ष्मी और समृद्धि

किसी भी भवन का मुख्य द्वार (Main Gate) उसकी आत्मा होता है। वास्तु के अनुसार, मुख्य द्वार हमेशा साफ-सुथरा, सुंदर और अच्छी रोशनी वाला होना चाहिए।

दिशा का चयनः ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) या उत्तर दिशा में मुख्य द्वार होना सर्वोत्तम माना जाता है।

विशेष उपायः प्रवेश द्वार पर कभी भी जूते-चप्पल का ढेर या कचरा न रखें। दहलीज पर नियमित रूप से स्वस्तिक या ॐ का चिन्ह बनाना और सुबह के समय मुख्य द्वार पर गंगाजल या साफ पानी छिड़कना घर में नकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश को पूरी तरह रोकता है।

2. रसोई घर (किचन): उत्तम स्वास्थ्य की धुरी

रसोई केवल भोजन पकाने की जगह नहीं है, यह परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और दीर्घायु की नियंत्रक है। अग्नि का सही दिशा में होना घर की महिलाओं के स्वास्थ्य और आर्थिक समृद्धि से सीधा जुड़ा है।

दिशा का चयनः रसोई हमेशा आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में होनी चाहिए। खाना बनाते समय गृहिणी का मुख पूर्व दिशा की ओर होना सर्वोत्तम है।

तत्वों का संतुलनः पानी (सिंक) और आग (गैस चूल्हा) को कभी भी बिल्कुल पास-पास या आमने-सामने न रखें, क्योंकि जल और अग्नि का यह विरोध पारिवारिक कलह का कारण बनता है।

3. शयनकक्ष (बेडरूम): मानसिक शांति और रिश्तों में मधुरता

दिनभर की थकान के बाद शयनकक्ष वह स्थान है जहाँ मनुष्य मानसिक शांति और नई ऊर्जा प्राप्त करता है। यहाँ की ऊर्जा


Image Credit by A Vasan : www.pexels.com


Image Credit by Jakson Martins : www.pexels.com

का सीधा असर दांपत्य जीवन और मानसिक स्थिति पर पड़ता है।

दिशा का चयनः घर के मुखिया का शयनकक्ष हमेशा दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण) में होना चाहिए। सोते समय सिर हमेशा दक्षिण दिशा की ओर और पैर उत्तर दिशा की ओर होने चाहिए।

सावधानियांः बेड के ठीक सामने कभी भी शीशा (Mirror) नहीं होना चाहिए, जिससे सोते समय आपका प्रतिबिंब उसमें दिखे। यह अनिद्रा और स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देता है। शयनकक्ष में हल्के और शांत रंगों (जैसे क्रीम, हल्का नीला या गुलाबी) का ही प्रयोग करें।

4. कार्यक्षेत्र (ऑफिस या दुकान): व्यापार वृद्धि का महामंत्र

वर्तमान समय में व्यावसायिक मंदी से बचने और निरंतर प्रगति के लिए कार्यस्थल का वास्तु सम्मत होना अनिवार्य है।

बैठने की स्थितिः ऑफिस या दुकान में बैठते समय आपका मुख हमेशा उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। आपकी पीठ के पीछे एक मजबूत दीवार होनी चाहिए, न कि कोई खिड़की या खुला रास्ता।

पैसों का स्थानः तिजोरी या कैश बॉक्स हमेशा उत्तर दिशा की ओर खुलने वाले स्थान पर रखें, क्योंकि उत्तर दिशा धन के देवता कुबेर की दिशा मानी जाती है।

संपादकीय दृष्टिकोणः वास्तुशास्त्र अंधविश्वास या तोड़-फोड़ का नाम नहीं है। यह आपके आस-पास की ऊर्जा के प्रबंधन का सरल विज्ञान है। बिना किसी बड़े फेरबदल के, केवल चीजों को सही दिशा में रखकर और स्वच्छता अपनाकर आप अपने जीवन की दिशा बदल सकते हैं।

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

मरुधरा की जीवन-रेखा और मरु-स्वर्ण

विशेष स्तंभ: - खेजड़ी एवं सांगरी का प्रामाणिक विश्लेषण

रेगिस्तान के भीषण थपेड़ों, झुलसाती धूप और जल के चरम अभाव के बीच जो वृक्ष सदियों से थार की माटी को जीवन और संबल दे रहा है, वह है- खेजड़ी (Prosopis cineraria)। 1983 में राजस्थान सरकार द्वारा 'राज्य वृक्ष' (State Tree of Rajasthan) घोषित यह पावन पादप केवल एक वनस्पति नहीं, बल्कि मरुस्थलीय पारिस्थितिकी (Desert Ecology) का कल्पवृक्ष, आस्था का केंद्र और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार स्तंभ है। यहां प्रस्तुत है खेजड़ी और इसके अद्वितीय फल 'सांगरी' का एक गंभीर, ऐतिहासिक व प्रामाणिक विश्लेषण।

1. सांस्कृतिक एवं पौराणिक वैभव: पांडवों के अस्त्र से राम की विजय तक

खेजड़ी (शमी) का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व सनातन काल से अक्षुण्ण है। यह वृक्ष भारतीय चेतना और शौर्य का मूक गवाह रहा है।

पौराणिक संदर्भ: महाभारत काल में पांडवों ने अपने अज्ञातवास के अंतिम वर्ष में अपने दिव्य अस्त्र (गांडीव धनुष सहित) इसी शमी वृक्ष के कोटर में छुपाए थे। वहीं, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने लंका विजय से पूर्व शमी पूजन कर शक्ति का संचय किया था। यही कारण है कि आज भी विजयादशमी (दशहरे) के दिन शमी पूजन की समृद्ध परंपरा है, जहाँ इसके पत्तों को स्वर्ण का प्रतीक मानकर आदरपूर्वक घर लाया जाता है।

यज्ञ और समिधा: सनातन अनुष्ठानों में खेजड़ी की लकड़ी को यज्ञ की समिधा के लिए अत्यंत पवित्र माना गया है, विशेषकर वसंत ऋतु और शनिवार के अनुष्ठानों में इसका विशिष्ट विधान है।

2. अकाल का संबल और साहित्यिक अमूर्तता: 'मींझर' का संदेश

खेजड़ी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जेठ की भीषण तरी में भी पूर्णतः हरी-भरी रहती है। जब थार में जीवन ठहरने लगता है, तब यह मरुधरा को छांव और संबल देती है।





छप्पनिया अकाल का इतिहास: सन 1899 (विक्रम संवत 1956) में पड़े 'छप्पनिया अकाल' के समय जब संपूर्ण मरुभूमि में अन्न का एक दाना शेष नहीं था, तब स्थानीय निवासियों ने खेजड़ी के तनों के आंतरिक छिलकों (वल्क) को पीसकर अपना जीवन बचाया था।

साहित्यिक गौरवः राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य कवि कन्हैयालाल सेठिया ने अपनी सुप्रसिद्ध कविता 'मींझर' में खेजड़ी की इसी त्याग और उपयोगिता की भावना को अत्यंत मार्मिकता से पिरोया है। खेजड़ी का फूल 'मींझर' मरुस्थलीय सौंदर्य का प्रतीक है।

3. वैज्ञानिक विश्लेषण और उपयोगिता: शून्य अपशिष्ट (Zero Waste) का सिद्धांत

खेजड़ी प्रकृति का एक ऐसा अनूठा उपहार है जिसका प्रत्येक भाग मानव और पशुधन के लिए बहुउपयोगी है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह नाइट्रोजन फिक्सेशन के माध्यम से अपने नीचे की भूमि को अत्यधिक उपजाऊ बनाता है।

पोषक तत्वों का राजा (सांगरी व खोखा): खेजड़ी का फल 'सांगरी' कहलाता है, जो प्रोटीन, फाइबर, जिंक, मैग्नीशियम और कैल्शियम का समृद्ध स्रोत है। सूखने के बाद यह 'खोखा' में परिवर्तित हो जाता है, जिसे मरुस्थल का प्राकृतिक सूखा मेवा कहा जाता है। मारवाड़ की प्रसिद्ध पारंपरिक सब्जी 'पंचकूटा' का यह मुख्य घटक है।

लूंग और कृषि उपकरण: इसके पत्ते 'लूंग' कहलाते हैं, जो अकाल के समय पशुधन के लिए सर्वोत्तम और पौष्टिक चारा बनते हैं। इसकी मजबूत लकड़ी से निर्मित हल और कृषि उपकरण आज भी ग्रामीण तकनीकी आत्मनिर्भरता के प्रतीक हैं।

फैक्ट-चेक और वैज्ञानिक सत्य: जहाँ लोक-मान्यताएं इस वृक्ष को दीर्घायु (सैकड़ों वर्ष) मानती हैं, वहीं पर्यावरण



विज्ञान के अनुसार थार के पारिस्थितिकी तंत्र में यह सर्वाधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाले शुष्क वृक्षों में से एक है। यद्यपि यह श्वसन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हितकारी है और इसके नीचे की वायु शुद्ध होती है, किंतु इसे आधुनिक चिकित्सा या कोविड-19 जैसी गंभीर व्याधियों में कृत्रिम ऑक्सीजन का विकल्प मानना वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं है। यह प्रकृति का फेफड़ा है, जो संपूर्ण थार को नवजीवन देता है।



4. पर्यावरण संरक्षण का वैश्विक इतिहास: खेजड़ली का अमर बलिदान

जब संपूर्ण विश्व पर्यावरण संरक्षण और 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसे शब्दों से अपरिचित था, तब मारवाड़ की माटी ने वृक्षों की रक्षा के लिए रक्त से इतिहास लिखा था। जोधपुर के समीप खेजड़ली गाँव में अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 बिश्नोई समाज के वीर-वीरांगनाओं ने खेजड़ी के वृक्षों को कटने से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। यह चिपको आंदोलन की जननी और विश्व इतिहास का एकमात्र ऐसा उदाहरण है जहाँ पर्यावरण के लिए इतना बड़ा सामूहिक बलिदान दिया गया।

संपादकीय दृष्टिकोण: मरुधरा के गौरव का संरक्षण, खेजड़ी केवल एक वृक्ष नहीं, मारवाड़ की जीवटता, संस्कृति और स्वाभिमान का साक्षात स्वरूप है। 'राइजिंग राजस्थान' और आधुनिक विकास के इस नए दौर में, अपनी इस प्राकृतिक धरोहर और ग्रामोद्योग (सांगरी प्रसंस्करण) को वैश्विक बाजार से जोड़ना तथा खेजड़ी के नए रोपण को बढ़ावा देना ही इस माटी के प्रति हमारा सच्चा कर्तव्य होगा। आइए, इस मरु-स्वर्ण को सहेजें और धरती को समृद्ध बनाएं।

(पब्लिशर फर्स्ट पत्रिका फीचर)

12 विश्वास के, विकास के, जनकल्याण के

राजस्थान सरकार



माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी जी

के द्वारा राजस्थान को दी गई

1 लाख 5 हजार करोड़ रुपए से अधिक की अभूतपूर्व सौगातों

के लिए

आभार



₹79 हजार करोड़ से अधिक की लागत से तैयार राजस्थान रिफाइनरी का राष्ट्र को समर्पण

₹13 हजार करोड़ से अधिक लागत की जयपुर मेट्रो फेज-2 का शिलान्यास

जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन

यमुना जल परियोजना के लिए MoA
किशाऊ बहुउद्देशीय बांध परियोजना से सर्वे पर्यन्त यमुना जल की उपलब्धता

ऊर्जा, सड़क एवं रेलवे की विकास परियोजनाएं | 7 कार्य | 13 हजार 443 करोड़ रुपए

राजस्थान संवाद

53,977 युवाओं को सरकारी नौकरी का नियुक्ति पत्र

जिला	अभ्यर्थियों की संख्या
अजमेर	1121
अलवर	2037
बालोतरा	435
बांसवाड़ा	1648
बारां	947
बाड़मेर	1116
ब्यावर	513
भरतपुर	1730
भीलवाड़ा	1199
बीकानेर	1728

जिला	अभ्यर्थियों की संख्या
बूंदी	1080
चित्तौड़गढ़	600
चूरू	1671
दौसा	2405
डीग	592
धौलपुर	864
डीडवाना-कुचामन	1480
डूंगरपुर	1709
हनुमानगढ़	1748
जयपुर	5852

जिला	अभ्यर्थियों की संख्या
जैसलमेर	461
जालौर	593
झालावाड़	842
झुंझुनूं	1695
जोधपुर	1971
करौली	1560
खैरथल-तिजारा	381
कोटा	1209
कोटपूतली-बहरोड़	951
नागौर	2051

जिला	अभ्यर्थियों की संख्या
पाली	766
फलोदी	359
प्रतापगढ़	898
राजसमंद	402
सलूम्बर	342
सवाईमाधोपुर	1482
सीकर	2505
सिरोही	488
श्रीगंगानगर	1206
टोंक	1661
उदयपुर	1679

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

स्वाभिमान अमर रहे

राष्ट्रवाद, मानवाधिकार की बुलंद आवाज़,
गरीब, पीड़ित व शोषित के अधिकारों के लिए समर्पित

मारवाड़ अनुसंधान संस्था

MARAWAR RESEARCH INSTITUTE

भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 (Indian Trust Act, 1882)



स्वामी विवेकानन्द | वीर विनायक दामोदर सावरकर | स्वामी दयानन्द सरस्वती | स्वामी श्री करपाती जी | स्वामी श्री अवधेशानन्द जी | स्वामी श्री आत्मानन्द जी | स्वामी श्री चिन्मयानन्द जी

★ हमारे प्रमुख कार्य क्षेत्र ★

- शिक्षा एवं कौशल विकास
- पर्यावरण संरक्षण एवं जल संवर्धन
- स्वास्थ्य जागरूकता एवं चिकित्सा सहायता
- ग्रामीण विकास एवं आजीविका संवर्धन
- संस्कृति संरक्षण एवं शोध कार्य
- सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकार संरक्षण

★ संस्था के महत्वपूर्ण पंजीकरण ★

- ट्रस्ट पंजीकरण संख्या
  202101091003371 (दिनांक 13/08/2021)
- संस्था पैन (PAN) कार्ड
  AAKTM5755G
- CSR रजिस्ट्रेशन नंबर
  CSR00106124
- नीति आयोग (NGO Darpan) ID
  RJ/2026/0972267
- आयकर विभाग (12A & 80G)
  AAKTM5755GE20251
- ISO सर्टिफिकेशन
  ISO 9001:2015 प्रमाणित

ISO 9001:2015 CERTIFIED

मीडिया पार्टनर

- S BHARAT National News Network
- 29NEWS Digital News Network
- RIGHT NEWS ANALYSIS National News paper
- PUBLISHER FRIST - Magazine

संपर्क करें : 9982888857

कार्यालय/पत्राचार पता- ब्राह्मणों का बास भोजासर, तहसील/जिला- फलोदी, (राजस्थान), पिन कोड- 342311



श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री



श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

विकसित भारत-जी राम जी योजना

सशक्त गांव - समृद्ध भारत

125 दिन की रोजगार गारंटी

योजना की प्रमुख विशेषताएँ

- डिजिटल प्रणालियाँ
- पारदर्शिता
- विकसित ग्राम पंचायत योजना द्वारा कार्यों का चयन

योजना के प्रमुख फोकस क्षेत्र

- **श्रेणी-I** जल संबंधी कार्य (जल सुरक्षा हेतु)
- **श्रेणी-II** मूलभूत ग्रामीण अवसंरचना कार्य
- **श्रेणी-III** आजीविका संबंधी अवसंरचना कार्य
- **श्रेणी-IV** आपदा प्रबंधन एवं जलवायु परिवर्तन से संबंधित कार्य

ग्रामीण विकास विभाग
राजस्थान सरकार द्वारा जनहित में जारी

सच की खोज, समाज के लिए

PUBLISHER FIRST MAGAZINE 1st NEWS

हिंदी एवं अंग्रेजी मासिक मैगजीन

बड़े खुलासे, सच्ची रिपोर्टिंग
बिना डर, बिना दबाव!



इस मैगजीन में क्या खास है?

- बड़े-बड़े सनसनीखेज खुलासे
- RTI (सूचना का अधिकार) के माध्यम से किए गए खुलासे
- इन्वेस्टिगेशन टीम द्वारा ज़मीनी स्तर पर जाँच-पड़ताल
- भ्रष्टाचार, घोटालों और सिस्टम की पोल
- प्रमाण, दस्तावेज और तथ्यों के साथ विशेष रिपोर्ट
- समाज और राष्ट्रहित के मुद्दों को प्रमुखता

सच से समझौता नहीं!

हमारी इन्वेस्टिगेशन टीम

ज़मीनी स्तर पर जाँच	दस्तावेजों की पड़ताल	तथ्य, सबूत और प्रमाण	विशेष रिपोर्ट और विश्लेषण

फ्रंट पेज पर आपकी फोटो | अंदर कवर होगी आपकी सक्सेस स्टोरी और विशेष खुलासे

★ CHOOSE YOUR FEATURE PACKAGE ★

मुख्य पैज (कवर पेज फीचर)

₹ 75,000/-

शामिल सुविधाएं

- फ्रंट पेज पर आपका फोटो व फीचर
- अंदर 4-6 पेज में सक्सेस स्टोरी / सनसनीखेज खुलासे
- RTI खुलासा (यदि लागू हो)
- इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट
- 20 हाई क्वालिटी हार्ड कॉपी मैगजीन

20 हार्ड कॉपी

हाफ पेज फीचर

₹ 55,000/-

शामिल सुविधाएं

- अंदर हाफ पेज पर आपका फीचर
- सक्सेस स्टोरी / विशेष खुलासा
- इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट (संक्षिप्त)
- RTI खुलासा (यदि लागू हो)
- 10 हाई क्वालिटी हार्ड कॉपी मैगजीन

10 हार्ड कॉपी

आधे से कम पेज फीचर

₹ 30,000/-

शामिल सुविधाएं

- अंदर आधे से कम पेज पर फीचर
- विशेष स्टोरी / संक्षिप्त खुलासा
- इन्वेस्टिगेशन अपडेट (संक्षिप्त)
- 5 हाई क्वालिटी हार्ड कॉपी मैगजीन

5 हार्ड कॉपी

आपको PUBLISHER FIRST में क्यों प्रकाशित होना चाहिए?

तेज, निष्पक्ष और तथ्य आधारित पत्रकारिता	RTI और जमीनी जाँच पर आधारित खुलासे	जनहित के मुद्दे और समाज के लिए समर्पित	प्रभावशाली पहुँच और विश्वसनीयता	आपके कार्य, विचार और संदेश को मिलेगी मजबूत पहचान

संपादक
सत्यनारायण जोशी

आज ही अपने फीचर के लिए संपर्क करें!
9982888857

सीमित स्लॉट उपलब्ध
जल्द संपर्क करें!

PUBLISHER FIRST – सच उजागर करेंगे, बदलाव लाएँगे!